ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-1 अप्रैल-I, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

समाजसेवा से होगा श्रेष्ठ समाज का निर्माण-सोलंकी

समाज सेवा प्रभागद्वारा अंतरष्ट्रीय सम्मेलन में भारत व नेपाल से 5000 समाज सेवी सरिक हुए

शांतिवन। कार्यक्रम में उपस्थित हैं राज्यपाल माननीय कप्तान सिंह सोलंकी, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु.संतोष व अन्य।

शांतिवन। हरियाणा एवं पंजाब के राज्यपाल माननीय कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि समाजसेवा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा भगवान का प्यार और शक्ति मिलती है। समाज सेवा द्वारा हम जीवन में पुण्य अर्जित कर सकते हैं। परंतु वर्तमान समय में समाज सेवा के साथ भ्रष्टाचार उन्मूलन का भी प्रयास होना चाहिए। वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के समाज सेवा प्रभाग की ओर से समाजसेवियों के लिए आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि हमें सेवा को अपना कर्त्तव्य समझकर करना चाहिए। शांति व सहिष्णुता भारत की पहचान है। इसके आधार पर ही भारत पुन: विश्वगुरु बनेगा। ब्रह्माकुमारी संस्था समाज सेवा के साथ मनुष्य को मनुष्य बनाने का जो प्रयास कर रही है वह सही मायने में सच्ची सेवा है। संस्था प्रमुख दादी जानकी ने कहा कि हमारा सदैव यही प्रयास रहता है कि बुराइयों को दूर किया जाए। इसके लिए जागरुकता के साथ व्यक्तिगत स्तर पर ज्ञान और शक्ति के जरिए सशक्त बनाने का प्रयास चल रहा है। नेपाल के लायंस इंटरनेशनल गवर्नर भूगोल श्रीचन केके झोरी ने कहा कि यहाँ आने पर लगता है कि परोपकार की परिभाषा क्या होती है। सुनाम के रोटरी इंटरनेशनल के पूर्व गवर्नर डॉ.एस.पी. सिंगला ने कहा कि मनुष्य को खुद को अच्छा बनाने का हमेशा प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर ब्र.कु.बृजमोहन, समाज सेवा प्रभाग के वाइस चेयरपर्सन ब्र.कु. अमीरचंद, गुलबर्गा के ब्र.कु.प्रेम और माऊंट आबू के ब्र.कु.अवतार, महाराष्ट्र ज़ोन की निदेशिका ब्र.कु.संतोष, दिल्ली की राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.सुंदरी एवं ब्र.कु.आशा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के बाद राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी ने संस्था प्रमुख दादी जानकी से उनके आवास पर जाकर मुलाकात कर कुशलक्षेम पूछी तथा संस्था की गतिविधियों की जानकारी ली। दादी ने बेहतर समाज बनाने तथा एक सुंदर समाज के निर्माण के लिए प्रेरित किया।

ब्रह्माकुमारीज़ मिशन मज़हब व सियासत से ऊपर - मोहम्मद अली

हैदराबाद स्थित शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर में बैलेंस शीट ऑफ लाइफ पर कार्यक्रम संपन्न। 2000 अतिथियों ने लिया भाग।

हैदराबाद। 'बैलेंस शीट ऑफ लाइफ'कार्यक्रम में मंचासीन हैं तेलंगाना के उप मुख्यमंत्री मोहम्मद अली, अभिनेता सुरेश ओबेरॉय, ब्र.कु. शिवानी तथा ब्र.कु. कुलदीप। सभा में उपस्थित शहर के गणमान्य जन।

हैदराबाद। ब्रह्माकुमारीज़ मिशन किसी मज़हब या सियासत से कोई ताल्लुक नहीं रखता बल्कि अमन, भाईचारा, मोहब्बत, सुकून के लिए काम करता है। उक्त उद्गार तेलंगाना के उप मुख्यमंत्री मोहम्मद अली ने ब्रह्माकुमारीज़ के हैदराबाद स्थित शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर में आयोजित कार्यक्रम 'बैलेंस शीट ऑफ लाइफ' में व्यक्त किये। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित अली जी ने कहा कि आज की दुनिया में इंसान रिश्वतखोरी, नाइंसाफी व खुदगर्ज़ी से भरा हुआ है। अमीर लोगों के पास धन-दौलत होने के बावजूद भी उनको सुकून नसीब नहीं होता। लेकिन आज मुझे बहुत खुशी महसूस हो रही है कि मैं ब्र.कु. शिवानी के प्रवचन में शामिल हो उन्हें साक्षात सुन रहा हूँ। हमें लगता है कि भगवान ने सारे आवाम को अमन की तालीम देने के लिए इन्हें यहाँ भेजा है। मैं ऊपर वाले का शुक्रगुज़ार हूँ कि मुझे सियासी हुकूमत से उठकर अल्लाहताला के लिए कुछ करने का मौका मिला। आगे उन्होंने ये भी कहा कि अगर आपके मिशन को मेरा किसी तरह का सहयोग चाहिए तो उसके लिए मैं हाज़िर हूँ, और तमाम लोग आपके नसीहत को फॉलो करें ऐसी मेरी मंशा है।

सुप्रसिद्ध अभिनेता सुरेश ओबेरॉय ने कहा कि जब मैं पैदा हुआ तो भारत और पाकिस्तान का बंटवारा हुआ था। लड़ाई-झगड़े और मर्डर आदि देखने और सुनने को मिला इससे मेरे रग-रग में गुस्सा घर कर गया था। हर बात में गुस्सा, और लोग मुझसे डरते थे। लेकिन जब परमात्मा से कनेक्शन जुटा तो मेरी सारी समस्याएं दूर हो गयीं। राजयोग करते-करते मुझे समझ में आने लगा कि चीज़ें कैसे बदल रही हैं। आज मेरे चेहरे पर खुशी, रौनक व शांति है जो सिर्फ परमात्मा से कनेक्शन का जादू है। मैं आप सबसे भी यही कहता हूँ कि आप भी परमात्मा से जुड़ें और उसके जादू को महसूस करें।

शांति सरोवर की निदेशिका ब्र.कु. कुलदीप ने सभी अतिथियों का सम्मान करते हुए उनके प्रति अपनी शुभ भावनाएं व शुभ कामनाएं व्यक्त की। उन्होंने मुख्य अतिथि अली जी के लिए कहा कि आप अपने जीवन में मूल्यों को लेकर कार्य करते हैं, आपकी यह धारणा तेलंगाना को उन्नति के शिखर पर पहुँचायेगी और आपके स्वप्न सवर्णिम तेलंगाना को सकार रूप देने का संपन्न होगा।

चाहे गलत, चाहे सही, जो कुछ हो रहा है उसकी ज़िम्मेवार सिर्फ मैं ही मैं हूँ - ब्र.कु.शिवानी

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता ब्र.कु.शिवानी ने बैलेंस शीट ऑफ लाइफ के बारे में कहा कि अगर ये पूरी दुनिया भगवान की मर्ज़ी से चल रही होती तो ये दुनिया कैसी होती? अगर भगवान की मर्ज़ी से दुनिया चलती तो क्या ऐसा होता कि किसी के अलग-अलग देशों में आलीशान घर हैं और किसी के पास रहने के लिए छत भी नहीं है। बचपन से आपने सुना है कि जैसा कर्म करेंगे वैसा फल मिलेगा। जो कुछ मेरे जीवन में हो रहा है वो मेरे पूर्व कर्म का फल है या भगवान की मर्ज़ी से हो रहा है? हमारे कर्म बराबर नहीं हैं इसलिए भाग्य भी सबका एक समान नहीं है। भगवान हमें ज्ञान, शक्ति और प्यार देता है पर अच्छा या बुरा कर्म करने की मर्ज़ी हमारी होती है। जो कुछ भी मेरे साथ हो रहा है वो हमारे पूर्व कर्मों के फल के अनुसार हो रहा है। जब मैं अपने कर्म, विचार व भावनायें बदल दूंगी तो सब कुछ बदल जायेगा। दूसरों की सफलता से हमें खुश होना चाहिए क्योंकि उसका अपना भाग्य मेरा अपना भाग्य। अगर जीवन को हमने रेस समझा तो आगे जाने की होड़ में आपसी प्यार, शुभ भावना और सहयोग खत्म हो जायेगा।

इस कोलाहल का हल तो निकालो...

दो आदमी विवाद कर रहे हैं। दोनों में से एक भी समझौता करने को तैयार नहीं है! चर्चा का विषय यह है कि मानव कमज़ोर हो गया है या मानवता? दोनों भिन्न-भिन्न दलीलें-तर्क वितर्क की शुरुआत करते हैं। एक का मत है कि व्यक्ति कमज़ोर हो गया है और दूसरे का मत है कि मानवता कमज़ोर पड़ गई है।

दोनों में से कोई हार स्वीकार करने को तैयार नहीं! इतने में वहाँ से एक संत जा रहे थे। उनके चेहरे पर तेज था, चाल में गंभीरता और आँखों में करुणा। ये देख उन दोनों को लगा कि संत को गुरु मानकर उनका निर्णय अंतिम माना जाये।

- ब्र. कु. गंगाधर

दोनों ने संत को अभिवादन कर कहा: ''कृपा करके आप हमारे विवाद का निर्णय कीजिए। मानव कमज़ोर हो गया है या मानवता कमज़ोर हो गई है? हमारे पास तर्क-वितर्क के लिए अनेकानेक शब्दकोश हैं, इसी कारण हम दोनों हार स्वीकार करने को तैयार नहीं।''

संत ने कहा: 'आइए, हम एक वृक्ष की शीतल छाया में बैठकर आपके विवाद का निराकरण सोचें।' आपको महात्मा लाओत्से का एक प्रसंग सुनाता हूँ – चीन के एक महान विचारक लाओत्से के पास शहर के एक चैम्पियन कुस्तीबाज ने आकर कहा: आपने बहुतों को जीता है लेकिन क्या मुझे जीत सकते हो?

''कुस्ती लड़ना है तो आ जाइए मैदान में।'' इसका कारण था कि लाओत्से सदा मज़ाक में या गंभीरता से कहते: ''मुझे कोई हरा नहीं सकता।'' यह बात सुनकर शहर के कुस्तीबाज का अहम जाग उठा। जिस कारण उसने लाओत्से को कुस्ती लड़ने के लिए चुनौती दी जिसे लाओत्से ने स्वीकार किया।

कुस्ती का दिन निश्चित हुआ। स्थान और समय निश्चित किया गया। सैंकड़ों लोग यह कुस्ती देखने के लिए पहुँचे। एक महान विचारक और स्नायुबद्ध कुस्तीबाज के बीच की यह लड़ाई थी। लाओत्से ने कुस्तीबाज को प्रणाम कर कहा:''मेरे जैसे के साथ कुस्ती लड़ना स्वीकार किया उसके बदले मैं आपका आभारी हूँ।'' ऐसे बोलकर वे कुस्ती के मैदान में चित्त होकर लेट गये और कहा: आइए, उस्ताद मेरी छाती पर आकर बैठिए और फिर घोषणा कीजिए कि मैं जीत गया हूँ।''

''अरे ये क्या बकवास कर रहे हो? ऐसा कभी होता है क्या? इसे कोई कुस्ती नहीं कहा जाता। उठो और लड़ो।''

लाओत्से ने कहा: ''ना भाई, मैं तो कभी का हार चुका हूँ। जो व्यक्ति कब का हार चुका है वह दूसरों को कैसे हरा सकता है?

कुस्तीबाज ने कहा:''मैं आपके जैसे नकली कुस्तीबाज के साथ लड़ना नहीं चाहता।'' ऐसा कहकर कुस्तीबाज चलने लगा। ''लेकिन एकाएक उसके मस्तिष्क में प्रकाश हुआ और उसने लाओत्से को प्रणाम किया'' ओहो! महाशय, आपने अपनी इच्छाओं को भी जीत लिया है इसलिए आपको कोई हरा नहीं सकता। मुझे थोड़ी देर बाद समझ में आया कि जिसने इच्छाओं को जीत लिया है वो जगत को जीत सकता है।

इसलिए भाइयों! मूल बात विवाद की नहीं है, लेकिन तुम्हारे बीच में 'ज़िद्द' की है। आप दोनों को एक-दूसरे को हराने में दिलचस्पी है। विवाद ज्ञानवृद्धि के लिए होना चाहिए, वाद-विवाद के लिए नहीं। अपने अहम के संतोष के लिए कोई झुकने को तैयार नहीं हैं। चर्चा या विवाद तो सत्य संसोधन के लिए होता है, व्यर्थ मुद्दा ढूंढ़कर दलीलबाजी में उतरने के लिए नहीं। बात सीधी है कि मनुष्य है तो मानवता है। मानव कमज़ोर बने तो मानवता कमज़ोर बनने लगती है। मानवता आखिर में तो मानव के सद्विचार से जन्म लेती है ना! इसलिए इस विश्व में मानव से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। आपकी तरह ही एक रेगिस्तान (रण) में से पास होते यात्रियों में से दो अलग-अलग विचारों वाले समूह तैयार हो गये। घटना ऐसी थी कि एक बालक बीमार था। उसका गला सूखता जा रहा था। कहीं से पानी मिल जाये तो बालक के प्राण बच जायें। सबको लगा कि ये चमत्कार हो गया। यह पानी का लोटा महान है। दूसरी तरफ के लोगों ने कहा, लोटा नहीं पानी महान है। बिना पानी के लोटे का क्या अर्थ? एक तरफ के लोग कहते हैं लोटा महान है, दूसरी तरफ के लोग कहते हैं पानी महान है। फिर कइयों ने कहा कि इस स्थल पर मंदिर बनाना चाहिए और उसका नाम लोटेश्वर महादेव रखना चाहिए। दूसरी तरफ के लोगों ने कहा: ना, लोटा महान - शेष पेज 8 पर

हमारे आपस के व्यवहार को लोग सिमर सकें

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

अपनी कमी को महसूस करना और उसको निकालने के लिए प्रयत्न करना, यह है अपना भला करना। दूसरे किसकी भी कमी को नोट करना, उसी अनुसार उनसे व्यवहार करना, इसमें हमारी भलाई नहीं है। जो जैसा है, संबंध-संपर्क तो सेवा में होता ही है। आज कहाँ, कल कहाँ, जहाँ भी जायेंगे परीक्षा तो कहीं भी आयेगी, जैसे मैं कहूँ वैसा सब करें यह नहीं हो सकता है। पर मैं जहाँ भी हूँ, बाबा जैसे चलाये वैसे चलूं, सफलता तो उसमें होगी ना। मुख्य बात है अपने आपसे ठगी नहीं करना। जैसे बाबा चाहता है ऐसे चलते नहीं हैं, जैसे हम औरों को बताते हैं ऐसे खुद नहीं करते हैं।

बाबा कहते थे कथनी पीछे, करनी पहले रखना। बाबा सभी भिन्न-भिन्न प्रकार के बच्चों को अपना बना करके हरेक बच्चे को एक समान प्यार देता है। यह तो साक्षी होकर देखेंगे तो पता चलता है कि बाबा ने किसी को स्पेशल नहीं दिया है। तो अपने आप को ठीक करने के लिए अलबेले नहीं रहो, अपने ऊपर तरस खाओ और सुस्ती को एकदम भगाओ। मैं बाबा से सदा ही गुडनाइट ऐसे करती हूँ, जो दिन की कोई भी बात दूसरे दिन तो क्या, स्वप्न में या संकल्प में या वाणी में भी बात याद न आवे, फिनिश। ड्रामा की सीन पूरी हो गई। वो सीन चली गई फिर भी मैं अंदर से उस सीन को सामने ले आ रही हूँ, तो बाबा हमारे सामने आयेगा नहीं, तो यह सज़ा है। बाबा के रूम में जायेंगे, बैठेंगे लेकिन आँसू बहा रहे हैं, ऐसे बाबा के कमरे में बैठे हैं, तो बाबा से मिलन तो मनाओ ना। बाबा दृष्टि दे रहा है, प्यार कर रहा है, वो प्यार तो लो ना। परंतु बाबा से प्यार लेने के बजाए अंदर जो रोना-धोना है, वो यहाँ करते रहेंगे तो और ही वायुमंडल को खराब कर रहे हैं। काम-चलाऊ कुछ भी बात करेंगे तो बाबा भी ऐसे ही हमारे से संबंध में आयेगा। जब ज़रूरत है तो बाबा मदद करे, बाकी क्या करती हूँ! तो सच्ची दिल से साहब को अपना बनाके रखना, उसमें धर्मराज भी कुछ नहीं कर सकता। कई ऐसी बातें हैं जो कारण कुछ और होगा, बाबा के सामने नहीं आयेंगे या यहाँ नहीं आयेंगे तो नुकसान किसको होगा? इससे अपने को ही नुकसान होता है, तो अपना मित्र आप बनना और बाबा को सदा अपना मित्र बनाके रखना। भले हमारा शिक्षक है, पर सखा रूप से मेरा कान पकड़ सकता है, स्पेशल कह सकता है तुम यह नहीं कर सकती हो। वो मुझे यूज़ करे और मैं उसको यूज़ करूं। अगर मैं उसको यूज़ नहीं करुंगी तो यूज़लेस हो जाऊंगी ना। इतना तो करें जो बाबा के यूज़फुल होकर रहें। बाबा भले समय पर मेरे को यूज़ तो करे। बाबा याद दिलाता है तुम कौन हो, अगर हमसे कोई बड़ी भूल होती है, हम किससे पेट भरते हैं या पास्ट अपने संस्कारों अनुसार चलते हैं, किसी के साथ अच्छी भावना है और किसी के साथ नहीं है, यह जो भेद वाला भाव है, भाव में भेद है, वो जिस घड़ी हमारे अंदर है, तो वो मतभेद जो है, वो श्रीमत पर चलने नहीं देता है। श्रीमत कुछ और कहती है और मतभेद कुछ और कराता है। मानो न मानो परंतु यह डीप बातें माननी पडेंगी। बाबा जो सुना रहे हैं वो बात कान खोलके सुनो। इतना बाबा सामने की प्यार भरी दृष्टि दे रहा है। बाबा कहते, तुम्हारे इस जीवन की पूजा (सेवा) होने वाली है, उसके पहले सबको इतना तो प्यार, सच्चाई और शक्ति मिले जो उनके दिल से निकले कि यह तो मेरे लिए पूज्य हैं। हमारा आपस में व्यवहार ऐसा हो जो सिमरणी में आने के लायक बन जाऊँ। वो होगा ज्ञान के सिमरण करने से, व्यर्थ चिंतन को नॉट एलाउड करने से। हमारे संकल्प की क्वालिटी ऐसी हो जो हर संकल्प अंदर से शांत, शुद्ध, श्रेष्ठ और दृढ़ हो तो बाबा शक्ति भर दे, जिससे मेरे को पर्सनल सुख मिले। तो शांत रहने में बहुत मज़ा है। और मुझे खुशी है मैं आप लोगों से दिल से बोलती हूँ, आप दिल में लेते हो तो कितनी अच्छी बात है।

आत्माभिमानी बनने से ही बाबा की याद ठहरेगी

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

योग की शक्ति के स्वरूप को हमें चेक करना चाहिए कि जब भी हम योग में बैठते हैं तो योग माना हमारा मन उसमें एकाग्रचित्त होना चाहिए, वो होता है या नहीं, होता है तो कितना समय होता है? ये चेक करने की बात है क्योंकि एकाग्रता हमारे योग की विशेषता है। जब और जहाँ हम अपने मन को लगाने चाहें, जितना समय हम मन को जिस स्टेज में ठहराने चाहें उसमें ठहरा सकें जिसको हम कहते हैं कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर। जिस समय जो लक्ष्य लेके बैठो तो जैसा वक्त वैसा काम होना चाहिए अर्थात् पढ़ने के समय पढ़ाई हो, खेलने के समय खेल खेलो। तो यह भी हमें चेक करना है कि योग माना मन एकाग्र हो और हमारा मन जितना एकाग्र रहता है उसमें विशेष प्राप्ति यह होती है कि हमारा निर्णय बहुत अच्छा होता है।

तो योग माना हमारे मन की एकाग्रता। अगर मन में प्राप्ति नहीं होती है, मानो फरिश्ते रूप में जो हल्केपन का अनुभव होना चाहिए, मन के संकल्प का भी और शरीर भान का भी हल्कापन, अगर वो नहीं होता है तो क्या हम कहेंगे कि हम फरिश्ते के अनुभव में रहे? इसलिए योग में यह चेक करना है कि जो संकल्प में लक्ष्य लेके बैठे वो हमारा पूरा टाइम चला या योग के साथ बीच-बीच में युद्ध भी चली? अगर चली तो उसको योग में एड नहीं करेंगे। जैसे 15 मिनट योग हुआ और 15 मिनट युद्ध हुई, तो ऐसे ही गिनती की जाएगी। तो आत्म-अभिमानी बनके बाबा को याद करना बहुत इज़ी है, जिसे आत्म-अभिमानी बनके बाबा को याद करने की आदत नहीं होगी, उसको बाबा की याद ज़्यादा समय नहीं ठहरेगी क्योंकि आत्मा का कनेक्शन परमात्मा से है। तो बाबा जिस विधि से योग करने को कहते हैं, उस विधि से हमारा योग हो तो योग की शक्ति जमा हो सकेगी और अगर योग की शक्ति थोड़ी-भी कम है तो खज़ानों से भरपूरता की खुशी व शक्ति फील नहीं होगी। युद्ध चलती रहेगी, मनन चलता रहेगा, वो सब होता रहेगा लेकिन यथार्थ न होने कारण वर्तमान संतुष्टि नहीं होगी और भविष्य प्रालब्ध भी जमा नहीं होगी। इसी रीति गुणों के लिए भी बाबा कहते हैं-हमारी चलन से, हमारे संबंध-संपर्क से किसको भी गुणों की फीलिंग आये। जैसे ये बहुत शांत रहते हैं, बातों में नहीं आते हैं, यह रमणीक रहते हैं, यह थोड़ा गंभीर रहते हैं, यह सब पता तो पड़ता है। तो इसी रीति से भी हम देखें एक तो हमारा जो भी कर्म होता है वो हर गुणों से सम्पन्न होता है? चलते-फिरते मुझे अन्तर्मुखता के गुण की फीलिंग आती है? कोई काम नहीं है, उस समय मैं एकदम बिल्कुल अन्तर्मुखी हो जाऊँ तो यह अभ्यास है? हमारे गुण-स्वरूप से दूसरों को गुणों को धारण करने की प्रेरणा आती है, उमंग-उत्साह आता है, तो यह हो गया गुण दान। तो मैं अपने संपर्क द्वारा गुण दान कर रहा हूँ/कर रही हूँ? ये चेक करो। तो ज्ञान, गुण, शक्तियां और समय... यह चारो ही खज़ाने जो हैं, उससे अगर हम भरपूर रहें तो सम्पन्नता की स्टेज के अनुभवी हो गये। अगर इन चारो में से कोई भी एकाध खज़ाना कम है या नहीं है तो हम सम्पन्नता के स्टेज का अनुभव नहीं कर सकेंगे। कभी-कभी करेंगे तो नैचुरल नहीं होगा। ऐसे ही बाबा कहते हैं इन खज़ानों को जमा करने का साधन क्या है? हम अपने पुरुषार्थ से खज़ाने जमा करते हैं। दूसरा है-हम जो एक दो को स्वमान देते हैं, स्वमान में रहते हैं तो उस नि:स्वार्थ सेवा द्वारा हम पुण्य का खाता जमा करते हैं। और एक दो के साथ सेवा में नि:स्वार्थ रहते हैं, बेहद में रहते हैं तो हमें दुआयें मिलती हैं। तो एक है अपने पुरुषार्थ से, दूसरी हैं दुआयें, तीसरा है पुण्य। यह तीन प्रकार से हम अपने खज़ानों को जमा कर सकते हैं। तो यह चेक करो। इसकी चाबी है निर्माण और निमित्त भव। तो सम्पन्नता को हम इन बातों से चेक करें। निमित्त भाव में मैं-पन और मेरापन खत्म हो जाता है क्योंकि करावनहार बाबा है, मैं तो ट्रस्टी हूँ। सिर्फ घर-गृहस्थी वाले ही ट्रस्टी नहीं हैं, मालिक तो हमारा बाबा है, हम निमित्त हैं। तो निमित्त भाव में निर्माणता भी आती है। उनकी वाणी भी निर्मल होती है। तो एक निमित्त भाव में यह तीनों प्राप्तियां होती हैं। तो निमित्त भाव खज़ाने जमा करने की चाबी है। तो खज़ानों को जमा करके सम्पन्नता को धारण करना है, उसके लिए यह अटेन्शन हमको रखना है।

जीवन वही जो दूसरों के लिए हो...मदन लाल

दिल्ली-डिफेन्स कॉलोनी। कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए बायें से आचार्य ललित गुप्ता, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. आशा, विधायक मदन लाल, वी.एस. राणा, ब्र.कु. प्रभा तथा प्रमोद सिंह।

दिल्ली-डिफेन्स कॉलोनी। हम अपने आप से हटकर जब दूसरों की सेवा में अपना अमूल्य समय देते हैं, तब उससे प्राप्त खुशी ही सच्ची खुशी है। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'खुशहाल और समृद्ध जीवन' विषयक कार्यक्रम में विधायक मदनलाल ने व्यक्त किये। उन्होंने इस कार्यक्रम के विषय पर बोलते हुए कहा कि हमें अपने सोचने के तरीकों को बदलना है। जो सुख धन आदि से मिलता है वह क्षणिक है। जब से मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हूँ तब से मैं मानवता की सेवा में तत्पर हो गया हूँ। समाज को अब ऐसी ज़रूरत महसूस होने लगी है।

गृहस्थ जीवन में बैलेन्स से सुख है...ब्र.कु. आशा - कार्यक्रम की प्रमुख वक्ता ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि जीवन में पाँच प्रकार के सुखों का गायन है तन, मन, जन, आयु व धन। सुख को भौतिक रूप से तौला नहीं जा सकता और आत्मिक सुख हमें बाह्य प्रकार के सुख से प्राप्त नहीं होता। साथ ही उन्होंने सुखी रहने के कई तरीके बताये, जैसे अपनी इच्छाओं को घटा दो तो सुख है, एक चुप सौ सुख, जहां संतोष है वहीं सुख है आदि आदि। साथ ही उनका कहना था कि जब तक गृहस्थ जीवन में बैलेन्स न हो तब तक ऐसे सुख की हम कामना नहीं कर सकते। आत्मिक सुख आत्मा समझने से प्राप्त होता है। आज से हम सभी मुस्कराहट एक दूसरे को देना और लेना सीख जाएं।कार्यक्रम में आये प्रख्यात **वास्तु एवं ज्योतिष विशेषज्ञ आचार्य ललित गुप्ता** ने कहा कि विश्व का माहौल आज उदासी का हो गया है। समृद्धि और खुशहाली कहीं गायब हो गई है। इसके लिए हमें अंतर्मन में झाँकना होगा। संतोषम परम सुखम के लिए हमें सकारात्मक सोचना होगा। सिरीफोर्ट सेवाकेन्द्र निदेशिका **ब्र.कु. गीता** ने कहा कि श्रेष्ठ कर्म करने से सुख और समृद्धि आती है। हमें अपने पाँच विकारों का दान देकर सुखी हो जाना है। साथ ही डिफेन्स कॉलोनी की निदेशिका **ब्र.कु. प्रभा** ने सभी को अपनी शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम के मध्य और अंत में सुप्रसिद्ध कवियत्री डॉ. ऋतु मंजरी ने कविताओं के माध्यम से श्रोताओं का मन मोह लिया।

!! खुशखबरी !!

ओमशान्ति मीडिया के सफलतम 15 वर्ष पूरे होने पर, इसकी बढ़ती लोकप्रियता और लोगों का रुझान देखकर शिव अवतरण के संबंध में और परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य का आरंभ से अब तक का हम एक संकलन निकाल रहे हैं। इस संकलन का उद्देश्य सर्व को समग्र रूप से एक पुस्तिका के माध्यम से परमात्म अवतरण से संबंधित सभी सामग्री एक स्थान पर उपलब्ध हो जाये, इसी प्रयास से हम ये कार्य कर रहे हैं। इससे सभी लाभान्वित हों ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है। इसलिए इसका हम अतिशीघ्र प्रकाशन कर रहे हैं। इन्हीं शुभ आशाओं के साथ... ओमशान्ति मीडिया।

अखनूर। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान नवनिर्वाचित विधायक राजीव गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आशा। साथ हैं अन्य भाई बहनें।

अष्ठ दिवसीय द्वादश ज्योतिर्लिंगम मेले का आयोजन

अगरतला। कार्यक्रम में उपस्थित हैं पवित्र कर जी, डॉ.प्रफुल्लजीत सिन्हा, वेदप्रकाश महावर तथा ब्र.कु. बबिता।

अगरतला। शिवजयंति महोत्सव द्वादश ज्योतिर्लिंगम 8 दिवसीय मेले के रूप में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जहाँ पर उपस्थित एसेम्बली के डिप्युटी स्पीकर पवित्र कर, अगरतला सिटी कॉरपोरेशन के मेयर डॉ.प्रफुल्लजीत सिन्हा, ओ.एन.जी.सी के जी.एम. वेदप्रकाश महावर, रेडक्रॉस के सेक्रेट्री नारायण भौमिक और त्रिपुरा और बांगलादेश की मुख्य संचालिका ब्र.कु.बबिता समेत सभी ने दीप प्रज्वलन करके मेले का उदघाटन किया। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

इस मेले में विशेष आठ फुट का शिवलिंग भी बनाया गया। इस मेले में राजयोग प्रदर्शनी, शिवरात्रि की विशेष प्रदर्शनी, सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी और साथ में नशा मुक्ति प्रदर्शनी का भी स्टॉल लगाया गया। जहाँ पर नशा दान कुंड रखा गया और पहले दिन से ही इस दान कुंड में बहुतों ने नशा छोड़ने की प्रतिज्ञा की। दिन में बहुत सुंदर भव्य रैली का भी आयोजन किया गया। रैली में ब्रह्माकुमारी बहनों ने शिवबाबा की प्रत्यक्षता के लिए बहुत सुंदर घोड़े की गाड़ी में शिवबाबा का लिंग रूप और साथ में भागीरथ ब्रह्माबाबा को सजाकर शहर में शांति शोभायात्रा का आयोजन किया।

संत सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें अनेक साधु-महात्माएं एकत्रित हुए। सभा में चर्चा का विषय था धरा पर शिवबाबा का अवतरण और उसका तात्पर्य। सभी संतों ने इस विषय पर बहुत अच्छे-अच्छे विचार रखे। अंत में ब्र.कु.कविता ने शिवबाबा के अवतरण के आध्यात्मिक रहस्य को बहुत सरल शब्दों में स्पष्ट किया। जिसमें संतों ने अपना समर्थन भी किया और बहुत खुश होकर संस्था की महिमा की। इसके अलावा नारी सुरक्षा के ऊपर भी सेमिनार रखा गया जिसमें शहर के गणमान्य व्यक्तियों और माताओं ने भाग लिया था। इस मेले में एक आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम था जिसमें कुमार सोमनदीप ने बहुत सुंदर ड्रम सेट बजाकर लोगों को आनंद दिलाया।

कुरूक्षेत्र-हरियाणा। शिव जयंती महोत्सव पर दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. प्रो. सी.डी.एस. कौशल, ब्र.कु. लक्ष्मण, ब्र.कु. शकुंतला तथा ब्र.कु. सरोज।

बहादुरगढ़। पारले-जी बिस्किट प्राइवेट लि. कंपनी में 'स्टेस फ्री लाइफ एंड पॉज़ीटिव थिंकिंग' विषय पर सेमिनार के पश्चात् कंपनी कर्मचारियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अमृता।

सांताक्रूज़ सेवाकेन्द्र ने सेवा का गाया चालीसा

सांताक्रूज़। कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. डॉ.निर्मला, ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु.संतोष, ब्र.कु.मीरा, ब्र.कु.योगिनी, ब्र.कु.सुधा, ब्र.कु.गोदावरी व अन्य।

सांताक्रूज़। सांताक्रूज सेवाकेन्द्र ने सेवाओं की 40वीं वर्षगांठ मनायी। इस कार्यक्रम का आयोजन वेस्ट मुंबई के मुक्तानंद पीस पार्क सांताक्रूज़ में किया गया। इस कार्यक्रम में ब्र.कु.डॉ.निर्मला, ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. मीरा, ब्र.कु. योगिनी, ब्र.कु. सुधा (रशिया), ब्र.कु. गोदावरी तथा ब्र.कु. दिव्यप्रभा उपस्थित थे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथियों में एडवोकेट आशीष शेलर,बी.जे.पी .प्रेसिडेंट, अल्का केलकर डिप्युटी मेयर, रमेश तौरानी,फिल्म निर्माता एवं निर्देशक, टिप्स इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड, डॉ. लक्ष्मी राव,फैमिली कोर्ट के प्रिंसीपल जज, मनोज विदवंस,मीडिया एवं एंटरटेन्मेंट के मैनेजिंग डायरेक्टर। सांताक्रूज़ सबज़ोन प्रभारी ब्र.कु.मीरा ने सभी का स्वागत किया। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें ज्ञान सरोवर माउण्ट आबू से ब्र.कु.नितिन द्वारा मधुर संगीतमय प्रस्तुति दी गई तथा मुंबई के प्रोफेशनल डांस ग्रुप द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथियों के साथ केट कटिंग तथा दीप प्रज्वलन समारोह हुआ। सभी अतिथियों ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही नि:स्वार्थ सेवाओं की खुले दिल से प्रशंसा की।

जयपुर-बापुनगर। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित चैतन्य झाँकी में उपस्थित हैं ब्र.कु. जयन्ती तथा अन्य।

दिल्ली-नरेला मंडी। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करते हुए निगम पार्षद केशरानी जी, ब्र.कु. शील, ब्र.कु. लक्ष्मण,डायरेक्टर विश्व कल्याण सरोवर,सोनीपत तथा अन्य।

अजमेर। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र के उद्घाटन अवसर पर केक काटते हुए दादी रतनमोहिनी। साथ हैं प्रसिद्ध उद्योगपति अर्जनदास एच.मेलवानी व मिनू एच.मेलवानी,हाँगकाँग, बी.एल. चौधरी,चेयरमैन,बोर्ड ऑफ सेकेण्ड्री एज्युकेशन, ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.शांता, ब्र.कु.भरत व अन्य।

गाजीपुर-उ.प्र.। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित शोभयात्रा का हरी झण्डी दिखाकर शुभारंभ करते हुए धर्मार्थ कार्य राज्य मंत्री विजय मिश्रा। साथ हैं कार्यकारिणी सदस्य उ.प्र. सरकार गोपाल यादव, ब्र.कु. निर्मला, ब्र.कु. दीपेन्द्र तथा अन्य।

शांतिवन। पठानकोट सेवाकेन्द्र की ओर से पहली पंजाबी बाबा के गीतों की सीडी रिलीज़ करते हुए दादी रतनमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु. प्रताप, ब्र.कु. प्रकाश तथा ब्र.कु. ओम प्रकाश।

पतौरा-मोतिहारी(बिहार)। महाशिवरात्रि पर आयोजित 'शिव संदेश यात्रा' को झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए ब्र.कु. मीना।

नवाबगंज-बरेली(उ.प्र.)। सेवाकेन्द्र के उद्घाटन समारोह में आये विशिष्ट अतिथी पूर्व विधायक मुन्ना पाण्डेय, ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. मनोरमा का स्वागत करते हुए ब्र.कु. विमला।

चण्डीगढ़-रामगढ़। 79वीं शिव जयन्ती के उपलक्ष्य में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल के नरेन्द्र सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. लीना तथा ब्र.कु. सविता।

'मैं' और 'मेरा' का सार है अध्यात्म

- ब्र.कु. निकुंज, घाटकोपर-मुम्बई

अधिकतर लोगों में यह आम धारणा सदियों से बनी हुई है कि मन और शरीर का एक दूसरे से दूर तक कोई लेना देना नहीं है। परंतु वास्तविकता यह है कि हमारा तन और मन ये दोनों परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। अत: तन का प्रभाव मन पर पड़ता है और मन का प्रभाव तन पर पड़ता है। वर्षों के चिकित्सा अनुसंधान ने यह साबित कर दिया है कि मन का एक छोटा सा भी विचार शरीर पर अपनी प्रतिक्रिया छोड़ देता है। मसलन, जब मन में क्रोध उत्पन्न होता है तो उसका तात्कालिक प्रभाव शरीर पर पड़ता है। इसी तरह जब मन में करुणा-दया-ममता जागती है, तब भी शरीर पर उसका असर दिखाई पड़ता है। तंत्रिका विज्ञानियों के अनुसार मन जिस स्थिति में होता है, मस्तिष्क द्वारा हार्मोन का स्राव भी उसी के अनुरूप होता है जिससे फिर शरीर की काया निर्मित होती है। परंतु प्रश्न यह उठता है कि आखिर इन दोनों के बीच का वास्तविक संबंध क्या है?

जब हमारा मन ठीक नहीं होता है, तब हम नकारात्मक भावनाओं से बुरी तरह घिर जाते हैं जिसका सीधा असर फिर हमारे स्वास्थ्य पर होता है। जबकि दूसरी ओर सकारात्मक सोच पर किए गए नवीनतम वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार यह देखा गया है कि यदि लोगों का आत्मसम्मान पहले से ही उच्च है तो उसका जादुई असर उनके मन और तन पर पड़ता है। इसके ठीक विपरीत यदि उनका आत्मसम्मान निम्न स्तर पर है तो वह उतना प्रभाव डाल नहीं पाता, कारण? क्योंकि दिन भर में उनकी प्रबल सोच शैली नकारात्मकता से भरी हुई रहती है।

मैं कौन और मेरा क्या, इस सार को समझाने वाले ज्ञान को ही अध्यात्म कहते हैं।

इस समस्या का सबसे अच्छा समाधान यह है कि हम खुद को अच्छी तरह से जान लें कि हमारे अपने भीतर क्या अच्छा है उसका सहज एहसास हो। अपने भीतर के अच्छे तत्वों को जानने से हमारे विचारों और भावनाओं की गुणवत्ता में गहरा परिवर्तन आता है। जो चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में हमें शांत और प्रेम से रहने के लिए सक्षम बनाता है।

यदि सही रीति से अपनाया जाए तो इस समस्त प्रक्रिया को सरल बनाने में 'आध्यात्मिकता' एक बड़ी भूमिका निभा सकती है। अकसर लोग यह पूछते हैं कि आध्यात्मिकता क्या है? यदि सरल भाषा में कहा जाए तो आध्यात्मिकता हमारे भीतर की दुनिया को जानने और उसमें उत्पन्न होने वाली अनेकानेक समस्याओं से निपटने की अद्वितीय कला है। 'मैं कौन और मेरा क्या', इस सार को समझाने वाले ज्ञान को ही अध्यात्म कहते हैं।

वर्तमान में जीने का एक दिन अभ्यास अवश्य करें

प्रश्न:- हमें समझ होनी चाहिए कि हमारी अपेक्षा किसी पर निर्भर ना हो। अपेक्षा रखें लेकिन साथ-साथ ये भी तैयारी कर लें कि अगर पूरा नहीं हुआ तो मैं दु:खी नहीं होऊंगी। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि हम इतने जिद्दी हो जाते हैं।

उत्तर:- क्या होता है कि लक्ष्य बनाते समय ही मैंने ये थॉट प्रोग्रामिंग कर ली कि ये लक्ष्य जब पूरा होगा तब मुझे खुशी मिलेगी। तब मैं उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए फिर कुछ भी करती जाऊंगी। ऐसा करने से मैं तनाव में चली जाती हूँ, मुझे गुस्सा आने लगता है, संबंधों में समस्याएं आ सकती हैं, लेकिन मुझे किसी भी तरह से उस लक्ष्य को पूरा करना है, क्यों? क्योंकि मेरी खुशी वहां है। अब हमें यह चेक करना है कि इन सबके पीछे मेरी कितनी एनर्जी खर्च होती जा रही है। अगर हम एक दिन ट्राय करें इस मान्यता के साथ कि 'मेरे साथ जो भी होने वाला है, वो अच्छा होने वाला है।' जब मैं अच्छी एनर्जी क्रियेट कर रही हूँ तो क्यों मेरे साथ कुछ गलत होगा। अभी जो एनर्जी बाहर जायेगी वही एनर्जी वापिस आयेगी। इसलिए हम हर परिस्थिति को इस विश्वास के साथ पार करें कि मेरे साथ जो भी होने वाला है वो अच्छा ही होने वाला है। ये मुझे अभी कैसा अनुभव करायेगा? बहुत हल्कापन। हर पल हल्केपन से खेलते हुए जीवन को मौज में बिताओ।

एक-एक पल को वर्तमान में जीते जायें। इस प्रयोग को आप एक दिन अवश्य करके देखें। एक दिन आप आने वाले कल के बारे में न सोचकर आज को देखें और आज में भी हर पल को देखते जायें। आपका अगला पल अपने आप अच्छा होने लगेगा।

ब्र.कु. शिवानी

प्रश्न:- जब मैं तनाव में नहीं होती हूँ तो परिस्थिति को हैंडल करने की शक्ति मेरे पास आ जाती है और कई बार क्या होता है कि उस परिस्थिति को हम देख ही नहीं पाते हैं।

उत्तर:- हमारे जीवन में हर प्रकार की परिस्थिति आने वाली है, अनेक चुनौतियां आने वाली हैं, क्योंकि हमें वर्तमान में रहने का अभ्यास नहीं है, तो जैसे ही विपरीत परिस्थिति आती है तो हम क्या सोचते हैं, अब क्या होगा....कैसे होगा? साधारणत: कोई भी परिस्थिति बड़ी नहीं होती है। हमने वित्तीय संकट की भी बात की थी। इसका समाधान हमें वर्तमान समय में रहकर करना है। लेकिन हम अपनी सारी शक्ति कहां सोचने में खर्च कर देते हैं? अब क्या होगा, आगे क्या होगा, धन खत्म हो गया तो बच्चों की पढ़ाई कैसे होगी, इस प्रकार के विचार को हम क्रियेट कर लेते हैं जिससे हमारा उमंग-उत्साह भी खत्म हो जाता है।

प्रश्न:- हमें सब कुछ तो समझ में आ गया अर्थात् जिस-जिस पर हमारी खुशी निर्भर कर रही थी वो छूट गया, अतीत भी छूटा और भविष्य के बारे में भी हमें समझ में आया कि जहां सही प्लानिंग होती है, वहां सफलता ज़रूर मिलती है। अगर हमारी खुशी भविष्य पर निर्भर नहीं है तो उसके बारे में योजना बनाना बुरी बात नहीं है। अगर हमारी खुशी भविष्य पर निर्भर होगी तो इसके साथ बहुत समस्यायें आयेंगी। अब हम वर्तमान समय में आ जाते हैं। हर बार वर्तमान की बातें की जाती हैं, तो वर्तमान में रहने का मतलब क्या होता है?

उत्तर:- वास्तव में हमारे बीते हुए समय और भविष्य में क्या होता है कि जब हम बीती हुई बातों का वर्णन करते हैं तो हम क्या कहना चाहते हैं? बीते हुए समय में हमने क्या किया और भविष्य में हम क्या करना चाहते हैं। यह सोचना मनुष्य का स्वभाव है। इन सब बातों में हम 'आत्मा के पार्ट' को भूल जाते हैं और हम ये सोचने लगते हैं कि जो मैं कर रहा हूँ वो 'मैं' ही कर रहा हूँ। अगर हम अपनी भाषा को भी देखें तो वो क्या होती है - क्या करूं, कैसे करूं, इसे कैसे करना चाहिए, तो सब कुछ 'करने' पर फोकस हो जाता है और इसीलिए हमारी खुशी भी 'करने' पर फोकस हो जाती है। फिर हम सोचते हैं कि ये करेंगे, ये होगा तब मुझे खुशी मिलेगी।

जबकि राजयोग हमें सिखाता है कि आप शरीर नहीं है, आप एक आत्मा हैं। पहली बात तो हमें यह समझ लेनी चाहिए कि हमारी खुशी किसी चीज़ पर निर्भर नहीं है। दूसरी बात कि हम हमेशा खुश रह सकते हैं, उसको अनुभव कर सकते हैं। वर्तमान में रहना मुश्किल नहीं है। अगर हम कुछ एक बातों का ध्यान रखें तो फिर वर्तमान में रहना बहुत आसान हो जायेगा।

जीवन को देखने का ढंग बदलें...

जीवन-सत्य की खोज में जो बड़ी से बड़ी कठिनाई हो सकती है, वह है जीवन के प्रति असम्मान का भाव। और हम सबके भीतर जीवन के प्रति असम्मान का भाव है। और यह बात उलटी लगेगी और समझने में थोड़ी मुश्किल पड़ेगी कि तथाकथित धर्मों ने ही हमें जीवन के प्रति असम्मान से भर दिया है, जबकि वास्तविक धर्म हमें जीवन के प्रति सम्मान से भरेगा।

क्योंकि परमात्मा जीवन में ही छिपा है। जीवन उसका ही वस्त्र है, उसका ही आच्छादन है। जीवन उसकी ही श्वास है। और अगर जीवन के प्रति असम्मान का भाव है, तो परमात्मा को खोजना असंभव है। क्योंकि उस सम्मान से ही तो उसमें प्रवेश का द्वार मिलेगा। असम्मान से तो हमारी पीठ उसकी तरफ हो जाती है।

पर ऐसी उलझन हो गई है कि धर्म कहते हैं कि परमात्मा को खोजो। और धर्म यह भी कहते हैं कि परमात्मा जीवन के कण-कण में छिपा है। लेकिन परमात्मा को खोजने की बात, जो रुग्ण चित्त लोग हैं, वे समझते हैं, जैसे जीवन का निषेध करके खोजना है। जैसे परमात्मा की खोज जीवन का विरोध है। जैसे परमात्मा को पाना है तो जीवन को छोड़ना होगा।

अगर यह सच है कि परमात्मा को पाने के लिए जीवन को छोड़ना होगा, तो फिर जीवन का सम्मान नहीं हो सकता; जीवन की निंदा होगी, अपमान होगा। और जीवन का अपमान होगा तो जीवन का जो परम-रहस्य है, उसका सम्मान कैसे हो सकता है?

कृष्ण तो जीवन के प्रति सम्मान से भरे हैं, जीसस तो जीवन के प्रति सम्मान से भरे हैं, बुद्ध तो जीवन के प्रति सम्मान से भरे हैं, लेकिन उनके अनुयायिओं का बड़ा वर्ग जीवन के प्रति अपमान से भरा है। इसका कारण बुद्ध, कृष्ण या क्राइस्ट की शिक्षाओं में नहीं है। इसका कारण अनुयायिओं की समझ में है।

कयोंकि वे सभी कहते हैं कि परम-सत्य को खोजो। हम भी उसे खोजना चाहते हैं। लेकिन जब भी हम उसकी खोज का विचार करते हैं, तभी हमें लगता है कि हमारा जो आज का क्षण, अभी का जो जीवन है, उसे छोड़ना पड़े, तभी उसकी खोज हो सके। इससे हटना पड़े, इसे नष्ट करना पड़े, तभी उसकी खोज हो सके। इसलिए नहीं कि उसकी खोज के लिए इससे हटना ज़रूरी है, बल्कि सच्चाई यह है कि हम इससे इतने ऊब गए हैं, और परेशान हो गए हैं, और हम इसमें इतने दु:खी और इतने दीन हो गए हैं कि जब भी हमें कोई मौका मिले, इसे छोड़ने और तोड़ने का, तो हम तैयार हैं। कोई भी बहाना मिले तो हम जीवन को नष्ट करने को तैयार हैं। हम आत्मघाती हैं, हम रुग्ण हैं। और ये रुग्ण लोग इकट्ठे हो जाते हैं, और ये सारी जीवन की परिभाषा बदल देते हैं, सारा ढंग बदल देते हैं। और ये पूरी व्यवस्था को उलटा कर देते हैं।

धर्म की तरफ पैथोलॉजिकल, रुग्ण चित्त लोग बहुत तीव्रता से उत्सुक होते हैं। उनकी उत्सुकता का कारण है। क्योंकि वे जीवन के तो विरोध में हैं। क्योंकि जीवन से तो उनको कोई सुख और शांति नहीं मिली। इसका

कारण यह नहीं है कि जीवन में सुख और शांति नहीं है। इसका कारण यह है कि उनका जो ढंग था जीवन से सुख और शांति पाने का, वह गलत था। तो वे जीवन के प्रति विरोध से भर गए हैं। और जब भी उन्हें कोई शिक्षक मिल जाता है, जो किसी और बड़े जीवन की तरफ इशारा करता है, तभी वे तत्काल यह निर्णय बना लेते हैं कि इस जीवन में ही पाप है, इस जीवन में ही दु:ख है। इसको छोड़ेंगे तो वह परम-जीवन मिलेगा।

जीवन में दु:ख नहीं है, जीवन को देखने के ढंग में दु:ख है। और अगर यही ढंग लेकर तुम परम-जीवन में भी प्रवेश कर गए, तो वहां भी दु:ख पाओगे। वह ढंग तुम्हारे साथ है। तुम कहां हो यह सवाल नहीं है। तुम जहां भी रहोगे, वह ढंग तुम्हारे साथ रहेगा। तुम जहां भी जाओगे, तुम्हारी आंख तुम्हारे साथ रहेगी। तुम्हें परमात्मा भी मिल जाए, तो तुम उससे भी दु:खी होने वाले हो! तुम सुखी हो नहीं सकते, तुम्हारा जो ढंग है उसको बिना बदले। लेकिन ढंग तुम बदलना नहीं चाहते, तुम परिस्थिति बदलने को उत्सुक हो जाते हो। तुम जीवन की निंदा करने में रस लेते हो। खुद गलत हो, यह तुम्हें सोचना मुश्किल हो जाता है।

यह जो निंदकों का एक समूह है, यह जीवन को नुकसान तो पहुंचा देता है, लेकिन परमात्मा की तरफ एक भी कदम बढ़ाने में सहायता नहीं कर पाता।

एक बात समझ लेनी ज़रूरी है कि अगर कोई परम-जीवन भी है, तो इस जीवन की ही गहराई का नाम है। अगर कोई पार का जीवन भी है, तो भी इसी जीवन की सीढ़ियों से होकर वह रास्ता जाता है। यह जीवन तुम्हारा दुश्मन नहीं है। यह जीवन तुम्हारा सहयोगी है, साथी है, संगी है। और अगर इस जीवन से तुम्हें कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता, तो तुम अपने देखने के ढंग को बदलना। तुम अपने देखने की वृत्ति को बदलना। लेकिन कोई भी आदमी अपने को बदलने को तैयार नहीं!

मैं तो इतना चकित होता हूँ कि जो लोग कहते भी हैं कि हम स्वयं को बदलने को तैयार हैं, वे भी स्वयं को बदलने को तैयार नहीं होते, कहते ही हैं। उनकी उत्सुकता भी होती है कि सब बदल जाएं, और वे न बदलें। क्योंकि खुद को बदलना-अहंकार को बड़ी चोट लगती है, बहुत पीड़ा होती है।

दु:खी आदमी भी यदि यहां आता है तो उसे इसका खयाल ही नहीं कि वह किसलिए आया हुआ है! वह किसलिए आया हुआ है? अपने को बदलने!

आप सारे लोगों की चिंता के लिए यहां आए हो? आपको किसने ठेका दिया, सबकी चिंता का? आपके पास बहुत समय मालूम पड़ता है, बहुत शक्ति मालूम पड़ती है। अपना जीवन आप दूसरों के लिए चुका रहे हो कि कौन आदमी क्या कर रहा है। क्या प्रयोजन है? आपकी चिंता का क्या कारण है?आप कौन हैं?

लेकिन आप आए थे यहां अपने को बदलने को और यहां आप फिक्र में पड़ जाते हो किसी दूसरे को बदलने की! असल में आप अपने को बदलने आए ही नहीं हो, इसीलिए यह फिक्र पैदा होती है। आपका खयाल गलत था कि आप अपने को बदलने आए हो। आपने अपने को धोखा दिया। आप चाहते तो सारी दुनिया को बदलना हो, आप तो जैसे हो, उससे आप रत्ती भर हटना नहीं चाहते। और फिर आप चाहते हो कि आपका दु:ख समाप्त हो जाए, आपकी पीड़ा समाप्त हो जाए! आप जैसे हो, वैसे ही रह कर दु:ख समाप्त न होगा। सवाल तो यह है की हम कहीं भी जाते हैं तो अपने को बदलनें नहीं बल्कि सामने वालों को बदलने का भाव होता है। यही समस्या सभी की है। हम जो होना चाहते वह हो नहीं पाते जो होना नहीं है उनमें हमारी शक्ति व्यय कर देते है। जीवन में सुख हमें चाहिए लेकिन बदलें दूसरे। यह विरोध ही हमें दु:ख की जंजीरों से मुक्त होने नहीं देता।

-ब्र.कु.शीतल।

रेवाड़ी। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के बाद नारे लगाते हुए ब्र.कु. मधु। साथ हैं निर्मला कोसला, मंजू सोमाणी, इंजीनियरिंग कॉलेज व अन्य।

भादरा-राज.। सेवाकेन्द्र की सिल्वर ज्युबली कार्यक्रम में मंचासीन हैं जिला प्रमुख शोभाजी, ब्र.कु. गीता,मा.आबू, श्यामानंद जी महाराज, विदूषी दत्त शास्त्री जी, ब्र.कु. कमल , ब्र.कु.विजय अन्य।

अंबेडकर नगर-अकबरपुर। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए अपर जिला अधिकारी राममूर्ति मिश्रा, ब्र.कु.सोमा, ब्र.कु.सुजीता, ब्र.कु.विपिन व अन्य।

अमृतसर-फगवाड़ा। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान विधायक सोम प्रकाश जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज, ब्र.कु. आदर्श तथा अन्य।

औरंगाबाद-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित हैं विधायक भोलाजी, पूर्व विधायक विरेन्द्र सिरोही, किसान मोर्चा संघ अध्यक्ष धुलीचन्द जी, ब्र.कु. राजश्री,दिल्ली व अन्य।

अयोध्या-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शिव का ध्वज फहराते हुए ब्र.कु. मुकेश। साथ हैं महन्त श्री जन्मेजय शरण जी महाराज एवं संतों की टोली।

बड़हलगंज-गोरखपुर(उ.प्र.)। नवनिर्मित भवन के उद्घाटन कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित हैं विधायक राजेश त्रिपाठी, ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन, ब्र.कु. दीपेन्द्र, ब्र.कु. निर्मला, ब्र.कु. रंजना तथा अन्य।

ओडिशा-तुषरा। महिला समिति की अध्यक्षा मंजू केड़ीया व अधिवक्ता बी.एल. केड़ीया को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमित्रा। साथ हैं डॉ अभिमन्यु।

कितना सुन्दर व महान है हमारा परिवार...

-ब्र.कु. सूर्य, माउंट आबू

जनकपुर-नेपाल। महाशिवरात्रि कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. गंगे दीदी, ब्र.कु. जगदीश तथा अतिथीगण।

जयपुर-राजापार्क। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् समूह चित्र में मेयर निर्मल नाहटा, ब्र.कु. रामप्रकाश, ब्र.कु. पूनम तथा अन्य।

जयपुर-सोडाला। शिवजयन्ती महोत्सव में आये गलतापीठाधीश्वर जगतगुरु अनंत श्री विभूषित श्री स्वामी सम्पतकुमार अवधेशाचार्य जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्नेह। साथ हैं ब्र.कु. मंजू तथा अन्य।

हिसार-हरियाणा। विधायक डॉ. कमल गुप्ता को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वंदना।

गोण्डा-उ.प्र.। किसान सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए जिला अधिकारी अजय कुमार उपाध्याय, ब्र.कु. दिव्या, ब्र.कु. मीता तथा अन्य।

फाजिलका-पंजाब। ज्ञानचर्चा के पश्चात् उद्योगपति महावीर मोदी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रिया।

स्वयं भगवान का परिवार, जिनकी माँ स्वयं ब्रह्मा... जिनकी बहन जगदम्बा, दुर्गा, महाकाली, सरस्वती और अन्य अनेक पूजनीय देवियां। ये उन्हीं देवी-देवताओं का परिवार है जिसमें श्रीकृष्ण व श्रीराम थे, श्रीलक्ष्मी व श्री नारायण थे, सीता व सावित्री थीं। अब पुन: परमपिता शिव बाबा ने अपने परिवार को मिलाया। आत्माएं जन्म लेते-लेते न जाने कहाँ-कहाँ चली गईं। उन्होंने आकर सबको इकट्ठा किया। वे हमारे मात-पिता, शिवबाबा व ब्रह्मा अपने इस महान परिवार को बहुत प्यार करते हैं और वे स्वयं इसका श्रृंगार कर रहे हैं।

दस लाख महानात्माओं का है ये ब्राह्मण परिवार:- इस परिवार में विश्व की सबसे महान आत्माएं भी हैं और वे विजयी 100 रत्न भी जिनकी याद से ही भक्तों के कलह क्लेश मिट जाते हैं। ये ईश्वरीय परिवार सबसे रॉयल भी है क्योंकि इसमें देव कुल की महानात्मायें हैं। इस परिवार में

सभी के चेहरे पवित्रता की दिव्यता से चमकते हैं, सन्तुष्टता की सच्ची शांति से शीतल तरंगे फैलाते हैं और ज्ञान-प्रकाश से जगमगाते हैं।

जो भी इस परिवार में आता है, प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। सबका जन्म-जन्म का नाता है, सब अपने ही हैं। ये तो केवल कर्मों के निगेटिव हिसाब-किताब के कारण कुछ भिन्नता दिखाई देती है। यही एक अद्भुत परिवार है जिसमें सभी महान हैं, सभी पवित्र हैं, सभी ईश्वरीय वरदानों से व ईश्वरीय शक्तियों से सम्पन्न हैं। ऐसा परिवार चारो युग में, सम्पूर्ण विश्व में कहीं भी दिखाई नहीं देगा। परिवार तो अच्छे भी होंगे, सतयुग में तो सारा विश्व ही एक परिवार होगा परन्तु भगवान नहीं होगा।

इस महान् परिवार के हर सदस्य में हमें सम्पूर्ण निश्चय हो कि ये महान् हैं, ये ही आत्माएं माया को जीतेंगी, इन्होंने ही भगवान के दिल को भी जीता है। ये हमारे हैं और हम सब ही जन्म-जन्म साथ रहेंगे।

इस विशाल परिवार में हम भी सुखी रहें व दूसरे भी हमारे साथ संतुष्ट रहें - इसका ही महत्व है। ये बड़ा परिवार हमारी साधनाओं में सहायक हो बाधक नहीं। जैसा ये महान परिवार है, वैसे ही इसमें महान वायब्रेशन्स व नि:स्वार्थ प्यार रहे - ऐसी ही कुछ चर्चाएं यहां प्रस्तुत हैं -

परिवार के बड़े, बड़ी दिल वाले हों - प्रत्येक स्थान पर इस परिवार में पूर्वज आत्माएं हैं, जो एक-एक संगठन के हेड हैं। संगठन के मुखिया की विशालता ही सबके लिए कल्याणकारी होती है। उनकी शुभ भावना, सबको सिखाने की कामना व सबको आगे बढ़ाने की भावना इस परिवार को अलौकिक बना देती है। बड़ों को सबकुछ समाना होता है, ज़्यादा सहन करना होता है और सबको प्यार देना होता है। व भी परिवार के मात-पिता सम ही होते हैं, उनकी उदारता ही परिवार को निर्विघ्न बनाती है। हमारे महायज्ञ की प्रमुख रहीं दादी प्रकाशमणि को सबने उदार स्वरूप में देखा, उनके अन्दर भावना रहती थी कि उनके परिवार में सब संतुष्ट रहें। वे अपने साथियों को कहा करती थीं - जितना बड़ा दिल रखोगे, उतना ही ज़्यादा आयेगा।

बड़ी दिल वाले छोटी-छोटी चीज़ों के लिए दूसरों को परेशान नहीं करेंगे। याद रखना चाहिए आपके इस दैवी परिवार में न जाने कौन अति भाग्यशाली आत्मा हो, जिसके भाग्य से ही सबकुछ आ रहा हो। यह सिद्धांत भी याद रखना चाहिए कि धन सम्पत्ति में एक प्रवाह है, इसकी गति को रोकना नहीं चाहिए अन्यथा इसका आना ही रुक जायेगा। जो आ रहा है, उसे सेवा में व सबको सुख देने में लगाते चलो, बढ़ता चलेगा। बड़ी दिल से सबको संतुष्ट करते चलो, इन महानात्माओं की दुआओं से भण्डारे भरपूर रहेंगे।

परिवार में कैसी दृष्टि हो? - हम जानते हैं भगवान ने आकर पुन: उन्हीं महानात्माओं का आह्वान किया है जो देवी-देवता थे। हम सबको इस नज़र से देखें कि ये देव-कुल की महान आत्माएं हैं, पुन: देवता बनने आये हैं। याद रखना है जिस दृष्टिकोण से हम दूसरों को देखेंगे, उसी दृष्टिकोण से वे हमें देखेंगे। इस दृष्टि से हमारे संगठन के वायब्रेशन्स अति अलौकिक व प्रेम-युक्त हो जायेंगे। इसके अतिरिक्त किसी के अवगुण नहीं देखने हैं परन्तु यदि अवगुण दिखाई भी दें तो एक तो उन्हें चित्त पर नहीं रखना है, दूसरा यह संकल्प करना है कि ये इन्हें छोड़ने के लिए ही तो यहां आये हैं। इससे घृणा नहीं, सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। तो बड़े छोटे सबका कर्त्तव्य है कि सबके प्रति ऐसी ही दृष्टि रखें व दृष्टि रखना सिखायें।

सुख देने की व आगे बढ़ाने की भावना हो - परिवार में यदि मनुष्य एक दूसरे को सुख देने की भावना रखे तो अति सुन्दर होगा। पहले यह भावना बढ़ानी होगी कि ये हमारा परिवार है। हमें परिवार में सबको आगे बढ़ाना है।

जो दूसरों को आगे बढ़ता देख प्रसन्न हो, वही बड़ी दिल वाला है परन्तु जो दूसरों को आगे बढ़ता देख परेशान हो जाए, यह सोचकर कि अब हमारा क्या होगा, कहीं ये हमारी सीट न हथिया ले या अब तो इसका नाम हो जायेगा, हमें कोई नहीं पूछेगा, सब इसकी ही तरफ चले जायेंगे - ये विचार परिवार में रौनक समाप्त कर देते हैं।

वही परिवार उमंग उत्साह में रहता है जहां हर व्यक्ति दूसरे को सिखाये और सिखाकर उन्हें योग्य बनाये। और सीखने वाले को भी सिखाने वाले का कृतज्ञ ही रहना चाहिए। सिखाने वाले निमित्त भाव से सिखाकर स्वयं को इस भावना से भी मुक्त करें कि मैंने इन्हें सिखाया। नम्रता ही हमारे इस महान परिवार की शोभा है।

राज्य स्थापित हो रहा है, संस्कार भिन्न-भिन्न हैं - परमात्मा ही धर्म व राज्य दोनों की स्थापना करते हैं। राज्य स्थापना में कोई राजा कोई रॉयल फैमिली मेम्बर व कोई प्रजा आदि बनेंगे। सारा संसार ही विविधता से भरपूर होगा। इसलिए आपके साथ जो आत्माएं हैं वे क्या पद पाने वाली हैं - ये उनके पुरुषार्थ व ज्ञान योग पर निर्भर करेगा। कोई कड़े संस्कार वाली आत्मा भी आपके मध्य होगी, तो कोई कटु बोलने वाली भी, कोई सुस्त कोई चुस्त, कोई बहुत बुद्धिमान, कोई साधारण। इन सब भिन्नता को स्वीकार कर लें और मान लें कि इनके बीच में रहकर ही हमें सेवा करनी है व श्रेष्ठ पुरुषार्थ करना है।

इसके लिए सहज भाव से एक दूसरे के साथ रहें, उनकी बुद्धि व संस्कारों को समझकर ही उनके साथ व्यवहार में आयें ताकि न वे डिस्टर्ब हों और न हम। हमारे संस्कार जितने सरल होंगे, दूसरे भी हमसे उतने ही सरल हो जायेंगे। हमारे ऊपर है कि हम अपने संगठन में उमंग उत्साह व श्रेष्ठ पुरुषार्थ का महौल बनाकर रखें।

तो आओ हम सब मिलकर भगवान के इस परिवार को आदर्श बनायें। बातों को जल्दी-जल्दी समाप्त करें, परिवार में निगेटिविटी न बढ़ने दें और ऐसा सुखद वातावरण बनायें ताकि इसकी संख्या बढ़ती ही चले।

वाराणसी-श्रीराम नगर। राष्ट्रीय किसान मेला एवं सब्जी प्रदर्शनी में डॉ. गौतम कल्लु,पूर्व कुलपति, जवाहर लाल नेहरु कृषि विश्व विद्यालय,म.प्र., पूर्व उप महा-निदेशक बागवानी,भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का स्वागत करते हुए ब्र.कु. सरोज।

बेशकीमती तोहफे को सहेजो

दुनिया के सभी प्राणियों में मनुष्य शारीरिक रूप से सबसे कमज़ोर है। आदमी चिड़िया की तरह उड़ नहीं सकता, तेंदुए से तेज़ दौड़ नहीं सकता, एलीगेटर की तरह तैर नहीं सकता, और बंदर की तरह पेड़ पर चढ़ नहीं सकता। आदमी की आँख चील की तरह तेज़ नहीं होती, न ही उसके पंजे और दाँत जंगली बिल्ली की तरह नुकीले होते हैं। जिस्मानी तौर पर आदमी बेहद लाचार, और असुरक्षित होता है। वह एक छोटे से कीड़े के काटने से मर सकता है। लेकिन कुदरत समझदार और दयालु है। उसने इंसान को जो सबसे बड़ा तोहफा दिया है, वह है सोचने की क्षमता। इंसान अपना माहौल खुद बना सकता है, जबकि जानवरों को माहौल के मुताबिक ढ़लना पड़ता है। दु:ख की बात है कि कुदरत के इस सबसे बड़े तोहफे का पूरा इस्तेमाल बहुत कम लोग कर पाते हैं। असफल लोग दो तरह के होते हैं – एक तो वे, जो करते तो हैं लेकिन सोचते नहीं; दूसरे वे जो सोचते तो हैं लेकिन कुछ करते नहीं। सोचने की क्षमता का इस्तेमाल किए बिना ज़िन्दगी गुज़ारना वैसा ही है, जैसे कि बिना निशाना लगाए गोली दागना।

ज़िन्दगी उस रेस्तरां (कैफेटेरिया) की तरह है जहां हमको खुद सर्विस करनी पड़ती है। वहां हम अपनी ट्रे उठाते हैं, खाना चुनते हैं, और उसका भुगतान करते हैं। अगर हम कीमत चुकाने को तैयार हैं, तो वहां से कोई भी चीज़ ले सकते हैं। अगर हम कैफेटेरिया में किसी के आकर खाना परोसने का इंतज़ार करेंगे, तो इंतज़ार ही करते रह जाएंगे। ज़िन्दगी भी वैसी ही है। हम चुनाव करते हैं, और फिर कामयाब होने के लिए कीमत चुकाते हैं।

ज़िन्दगी चुनाव और समझौतों से भरी पड़ी है।

भाग्य केवल संयोग पर निर्भर नहीं होता, बल्कि हम उसे अपने लिए चुनते हैं। वह इंतज़ार करने की नहीं, बल्कि हासिल करने की चीज़ है। – विलियम जेनिंग्स ब्रायन

यहां दोनों बातें एक दूसरे का विरोध करती हैं। अगर ज़िन्दगी चुनावों से भरी है, तो समझौते का सवाल कहां उठता है? यकीनन, समझौता भी एक चुनाव है। आइए, इस पर विचार करें।

ज़िन्दगी चुनावों से कैसे भरी है?

जब हम अधिक खाना खाते हैं, तो अपना वज़न बढ़ाने का चुनाव खुद करते हैं। जब हम अधिक शराब पीते हैं, तो दूसरे दिन सिर में दर्द पा लेने का चुनाव हमारा अपना होता है। अगर हम शराब पी कर गाड़ी चलाते हैं, तो दुर्घटना में खुद को, या किसी और को मार देने का खतरा खुद चुनते हैं। जब हम दूसरों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं, तो इस बात का चुनाव खुद करते हैं कि दूसरे भी हमारे साथ बुरा व्यवहार करें। जब हम दूसरों

की परवाह नहीं करते, तो यह चुनाव हम खुद करते हैं कि दूसरे भी हमारी परवाह न करें।

हर चुनाव का एक नतीजा भी होता है। हम चुनाव करने के लिए तो स्वतंत्र होते हैं, लेकिन उसके बाद वह चुनाव हमें नियंत्रित करने लगता है। दूसरों से कुछ अलग बनने के लिए हम सबके पास बराबर का मौका होता है। ज़िन्दगी की तुलना गीली मिट्टी से की जा सकती है। जिस तरह कुम्हार गीली मिट्टी को मनचाही शक्ल में ढ़ाल सकता है, उसी तरह हम भी अपनी ज़िन्दगी को मनचाहा रूप दे सकते हैं।

ज़िन्दगी समझौतों से कैसे भरी है?

ज़िन्दगी केवल मौज-मस्ती का नाम नहीं है। इसमें दु:ख और निराशा का भी सामना करना पड़ता है। ज़िन्दगी में ऐसी घटनाएं भी घटती हैं, जिनके बारे में हमने सोचा तक नहीं होता है। कई बार हर चीज़ उलट-पलट हो जाती है। अच्छे लोगों के साथ भी बुरी घटनाएं घट जाती हैं। कुछ चीज़ें हमारे काबू से बाहर होती हैं, जैसे कि अपाहिज होना, या शरीर में कोई जन्मजात दोष होना। हम अपने माँ-बाप, या पैदा होने के वक्त के हालात को तो नहीं चुन सकते। लेकिन ऐसा हो ही गया है, तो अब हम क्या करेंगे - चीखेंगे-चिल्लाएंगे या तकदीर की चुनौती को मंज़ूर करते हुए आगे बढ़ेंगे? यह चुनाव हमको करना है।

किसी साफ दिन में हमको झील में सैंकड़ों नावें तैरती दिखाई देंगी। हर नाव अलग दिशा में जा रही होती हैं। क्यों? इसलिए कि उनमें पाल (शामियाना) को उसी ढंग से लगाया जाता है, और इसका फैसला नाविक करता है। यही बात हमारी ज़िन्दगी पर भी लागू होती है। हम हवा के बहाव की दिशा तो नहीं चुन सकते हैं।

सेहत, खुशी और सफलता हर आदमी के जूझने की क्षमता पर निर्भर होती है। बड़ी बात यह नहीं है कि हमारी ज़िन्दगी में क्या घटित होता है, बल्कि यह है कि जो घटित होता है, हम उसका सामना कैसे करते हैं। –जॉर्ज एलेन

अपने हालात को चुनना तो हमेशा हमारे बस में नहीं होता, लेकिन अपना नज़रिया हम हमेशा चुन सकते हैं। यह हमारा अपना चुनाव होता है कि विजेता की तरह व्यवहार करें, या पराजित की तरह। हमारी किस्मत हमारे मुकाम से नहीं, बल्कि मिज़ाज से तय होती है।

इंद्रधनुष के बनने के लिए बारिश, और धूप, दोनों की ज़रूरत होती है। हमारी ज़िन्दगी भी कुछ ऐसी ही है। उसमें सुख है, तो दु:ख भी है, अच्छाई है, तो बुराई भी है, और उजाला है, तो अंधेरा भी है। जब हम मुसीबत का सामना सही तरीके से करते हैं, तो और मज़बूत बन जाते हैं। हम अपनी ज़िन्दगी की सभी घटनाओं पर तो नियंत्रण नहीं कर सकते, पर उनसे निपटने के तरीके पर हमारा नियंत्रण होता है।

रिचर्ड ब्लेशनीडेन सेंट लुईस विश्व मेले में भारतीय चाय का प्रचार करना चाहते थे। वहां काफी गर्मी थी। इसलिए उनकी चाय कोई नहीं पीना चाहता था। उसी बीच उन्होंने देखा कि ठंडे ड्रिंक्स की खूब बिक्री हो रही है। उनके मन में खयाल आया कि क्यों न अपनी चाय में बर्फ मिलाकर उसे ठंडे ड्रिंक्स के रूप में बेचे। उन्होंने ऐसा ही किया, और लोगों ने उनकी ड्रिंक को खूब पसंद किया। दुनिया में ठंडी चाय का चलन वहीं से शुरु हुआ। आदमी कोई बाँजफल (corn) नहीं है, जिसके पास कोई विकल्प नहीं होता। बाँजफल खुद यह तय नहीं कर सकता कि वह विशाल वृक्ष बन जाए, या गिलहरियों का भोजन बने, लेकिन मनुष्य चुनाव कर सकता है। अगर हमारे पास नींबू हो, तो हम उसे आँख में डाल कर चीख-चिल्ला सकते हैं, और उसकी शिकंजी बना कर पी भी सकते हैं।

अगर हालात बिगड़ जाएं (कभी न कभी ऐसा होता ही है), तो यह हम पर निर्भर होता है कि उनका सामना ज़िम्मेदारी से करें, या खीझते हुए करें। -**ब्र.कु. प्रीति।**

ईशरगढ़-पिपली। महाशिवरात्रि के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए जिला परिषद सदस्य जय भगवान शर्मा। साथ हैं सरपंच जी, ब्र.कु. लक्ष्मण, ब्र.कु. प्रेरणा तथा अन्य।

ढ़कौली-चण्डीगढ़। महाशिवरात्रि पर शिवध्वजारोहण के बाद ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. हरविन्द्र तथा अन्य गणमान्य जन।

हाजीपुर-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग द्वारा आयोजित एक दिवसीय फ्री डेंटल मेडिकल चेकअप के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में डॉ. विजय कुमार, मधुबाला, डॉ. जे.पी. सिंह, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. आरती तथा डॉक्टर्स।

भीरा-गोला गोकर्ण नाथ। रेलवे स्टेशन मास्टर कमलेश चौधरी को आध्यात्मिक प्रदर्शनी द्वारा ईश्वरीय ज्ञान समझाते हुए ब्र.कु. सुनीता।

दसुआ। महाशिवरात्रि पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए पूर्व चीफ इंजीनियर अमरजीत सिंह, ब्र.कु. ज्ञानी, ब्र.कु. सुमन तथा ब्र.कु. स्मृति।

दिल्ली-पीतमपुरा। 'अलविदा तनाव एवं मेडिटेशन शिविर' का केक काटकर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. प्रभा तथा अन्य।

देवबंद-उ.प्र.। शिव जयंती के उपलक्ष्य में एस.डी.एम. राजेश कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदेश व ब्र.कु. सुधा। साथ हैं चौधरी भूपेन्द्र सिंह व अन्य।

सादड़ी-राज.। राष्ट्रीय संत रामप्रसाद जी के सेवाकेन्द्र आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शुचीता तथा अन्य।

मुज़फ्फरनगर-गाँधी नगर। शिव जयन्ती पर जे.वी. पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य वचन सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. विजय।

कौशाम्बी-उ.प्र.। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के दौरान आयोजित कार्यक्रम में परियोजना निदेशक आर.सी. पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कमल।

खानपुर-राज.। नवनिर्वाचित सरपंच ललित राठौर व उप सरपंच सुधीर पार्थ को ज्ञानचर्चा के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. तपस्विनी।

चुनार-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में सुशील सिंह,पटेल बाबा, डॉ. सुधा गंगवार, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

झाँसी-राजगढ़(उ.प्र.)। त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण के समय उपस्थित हैं नगरपालिका अध्यक्ष धन्नूलाल गौतम, पार्षद अवधेश यादव, ब्र.कु. प्रतिमा तथा ब्र.कु. रामकुमार।

जहांगीराबाद। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन के पश्चात् मंच पर उपस्थित हैं एस.एच.ओ. राजेन्द्र सिंह, विधायक होशियार सिंह, ब्र.कु. राजेश्री, ब्र.कु. मंजु, ब्र.कु. शिल्पा व अन्य।

जीवन शुद्ध करने वाले आशीर्वाद के पात्र

प्रजापिता ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजा को रच करके कहा इस यज्ञ द्वारा वृद्धि को पाओ अर्थात् उन्नति को पाओ। जितना जीवन रूपी यज्ञ को शुद्धिकरण में लगायेंगे उतना आत्मोन्नति को प्राप्त करेंगें। यज्ञ जिसमें तुम लोगों का अनिष्ट नहीं होता है, विनाश रहित, इष्ट सम्बन्धियों की कामनाओं की पूर्ति करेगा। इस यज्ञ द्वारा देवताओं की उन्नति करो अर्थात् दैवी संस्कारों की वृद्धि करो। ये देवता लोग उन्नति करेंगे, ये देवता लोग तुम लोगों की उन्नति करेंगे अर्थात् जितना जीवन में दैवी संस्कारों को धारण करेंगे, अच्छे विचारों को धारण करेंगे उतनी आत्मोन्नति होगी। वहीं दैवी संस्कार, नित्य हमें प्रगति के मार्ग पर ले जायेंगे। आराध्य सम्बन्धी भोगों को भी उपलब्ध करायेंगे। जीवन में जो आवश्यकता है, हर चीज़ उसके लिए हाज़िर कर देंगे। प्रकृति भी ऐसी आत्माओं की सेवा में हाज़िर हो जायेगी। भगवान ने आगे कहा कि इस सृष्टि चक्र के अनुसार जो नहीं चलता है, वह पापायु अर्थात् पापी है। इंद्रियों का सुख चाहने वाला व्यर्थ जीता है। अर्थात् यज्ञ ऐसी विशेष विधि है, जिसमें इंद्रियों का आराम नहीं अपितु अक्षय सुख है। इंद्रियों का संयम के साथ लगने का विधान है। शुद्धिकरण की प्रक्रिया में इंद्रियों के साथ लगने का एक विधान है। इंद्रियों का आराम चाहने वाला पापात्मा है। इसलिए हे अर्जुन! तुम अपनी इंद्रियों को भी यज्ञ के शुद्धिकरण की प्रक्रिया में नित्य लगाते रहो। यहाँ पर एक बहुत सुंदर बात भगवान ने कही है कि अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है। अब मनुष्य हमेशा स्थूल रूप से सोचता है, इसलिए जब भी कभी बरसात नहीं होती है, तो यज्ञ करते हैं कि गीता में ऐसा कहा गया है। लेकिन इसके भावार्थ को उन्होंने समझा नहीं, कि भगवान कभी स्थूल स्तर पर बात नहीं करेगा। भगवान जिसको सुपर कॉन्शियस कहते हैं, उसकी जो समझानी है वो भी उस स्तर की होती है। उसके गुह्य रहस्य को समझने की आवश्यकता है। अन्न की उत्पति वृष्टि से होती है अर्थात् आत्मा को जो भोजन चाहिए उसकी उत्पति वृष्टि से होती है। वृष्टि अर्थात् आशीर्वाद। जहाँ आशीर्वाद की वृष्टि होती है, वहाँ आत्मा को नित्य भोजन प्राप्त होता है अर्थात् अच्छे विचारों के भोजन से उसकी आत्मा श्रेष्ठ बनने लगती है, आंतरिक तृप्ति का अनुभव करने लगती है। इसलिए हे अर्जुन! ऐसा कर्म करो, क्योंकि वृष्टि का आधार यज्ञ है अर्थात् अब जीवन को शुद्धिकरण की विधि में लगाओ। और जो व्यक्ति अपने इंद्रियों को भी शुद्ध करता है, जीवन को भी शुद्ध करता है। ऐसी आत्माओं के लिए हर व्यक्ति आशीर्वाद की वृष्टि करता ही है और जब उसकी वृष्टि होती है तब जीवन के अंदर सम्पन्नता आती है। इसलिए कहा कि अन्न की उत्पति वृष्टि से होती है। वृष्टि अर्थात् कृपा यज्ञ से होती है। जितना शुद्धिकरण में अपने आपको लगाओ, यह यज्ञ कर्मों से ही उत्पन्न होने वाला है। अर्थात् अच्छे कर्म करो उसके लिए और उसी से सम्पूर्ण करो उसको वा उसी से पूर्ण करो। कर्म ज्ञान से उत्पन्न होता है, वेदों से वेद माना ही ज्ञान। इसलिए अच्छे कर्म करने की प्रेरणा करो। महात्मा गांधी इसलिए कहते थे कि बुद्धि का शुद्ध विकास अच्छी आत्मा और शरीर के विकास के साथ-साथ और समांतर गति से चलना चाहिए। हृदय, बुद्धि और शरीर के बीच सामंजस्य न होने के कारण ही जो परिणाम आया है वह असहनीय है। हृदय की वृत्ति बिना तैयार ज़मीन में उगती घास है, जो उगता है और अपनी तरह मुरझा जाता है, सूख जाता है। यह स्थिति दयाजनक होने के बावजूद स्तुतियोग्य गिनी जाती है।

विद्या का केवल विवाद के लिए उपयोग हो, धन का केवल अभिमान प्रदर्शन के लिए प्रयोग हो, तो ये 'विकास' कहा जाये या 'विनाश'? मनुष्य संस्कारी और सदाचारी बनना चाहता है तो लाओत्से के प्रसंग को देखो, उसी तरह जितेन्द्रिय बनना चाहिए। आज के मनुष्य इंद्रियों के वश में हैं, स्वयं के नियंत्रण में नहीं। परिणामस्वरूप मानवता या मानव आपस में प्रेम करने के बजाय खुद की वृत्तियों, तृष्णाओं और आकांक्षाओं से प्रेम करता है। वृत्तियां उसको बहकाती हैं। आज का मानव शांतिप्रिय बनने के बदले कोलाहल प्रिय बन गया है। मानव जीवन में कोलाहल कम हो और शांति प्रस्फुटित हो उसके लिए क्या करना चाहिए?

पाँच बातें:-

1.मनुष्य को व्यर्थ दलीलों, वाद-विवाद से मुक्त तथा वाणी संयम होना चाहिए।

2.विकास के लिए बाह्य की ओर सम्पूर्ण शक्ति केन्द्रित करने के बदले 'अंदर' के विकास को ज़्यादा महत्व देना चाहिए।

3.मनुष्य को आजकल सभी क्षेत्रों में 'जीत' का जुनून चढ़ा हुआ है। परिणाम स्वरूप सत्य और असत्य सिद्ध करने के लिए व्यर्थ विवाद करता है।

4.बाह्य शांति की खोज के बदले मनुष्य को शांति की आंतरिक खोज को महत्व देना होगा। उसके लिए वैचारिक शुद्धि की ओर ध्यान देना होगा।

5.अंदर का कोलाहल थमेगा तो ही बाहर का कोलाहल रुकेगा यह बात याद रखनी पड़ेगी।

ज्ञान से मिलती है और ज्ञान कहाँ से मिलता है? अविनाशी परमात्मा जो ज्ञान का सागर है वहाँ से मिलता है। कितनी सुंदर एक विधि बतायी है कि जीवन को शुद्धिकरण करने से क्या प्राप्ति होती है। हर आत्मा के आशीर्वाद नित्य प्राप्त करते रहते हैं और जीवन को इतना सुंदर बना सकते हैं। ज्ञान से पूर्ण हमारा जीवन होने लगता है। इसलिए कहा कि भगवान कभी स्थूल स्तर पर बात नहीं करते हैं। जितना ऊँचा उनका स्तर है, उतने ही ऊँचे भाव से वे अर्जुन को प्रेरणा दे रहे हैं। जैसे दुनिया में भी कहा जाता है कि जिस कलर का चश्मा पहनेंगे, वैसा ही नज़र आने लगता है। पीले रंग का चश्मा पहनो तो उसको सब पीला ही पीला नज़र आने लगता है। लाल रंग का चश्मा पहनो तो सब लाल ही लाल नज़र आने लगता है। ऐसे ही दुनिया के मनुष्यों में जब हिंसात्मक भावनायें आने लगीं तो उनकी दृष्टि भी वैसी बन गई, भगवान ने भी तो गीता में युद्ध की प्रेरणा दी है। भगवान जो सर्वोच्च सत्ता है इस संसार की। स्वयं मात-पिता हैं व पालनहार है, तो क्या अपने बच्चों को आपस में लड़ने की प्रेरणा देंगे, कभी नहीं। यदि लड़ते होंगे तो उसको छुड़ायेंगे कि क्यों लड़ रहे हो। कभी लड़ने की प्रेरणा नहीं देंगे।

मानव जीवन में... -पेज 2 का शेष

नहीं है। इसलिए मंदिर का नाम 'जलेश्वर महादेव' रखना चाहिए। और तीसरे समूह के लोगों ने कहा कि यह रण सौभाग्यशाली है जहाँ ऐसा चमत्कार हुआ इसलिए यहाँ बनने वाले मंदिर का नाम 'रणेश्वर महादेव' रखना चाहिए। ऐसे अंदर-ही-अंदर लड़कर मरने-मारने पर उतारू हो गये। परंतु मूल बात थी पानी की। पानी ने ही बालक का जीवन बचाया था। इसलिए वाद-विवाद छोड़ो और मानव की तरह बनो, अहंकार के पुतले की तरह न जीओ।

आज के मानव की यही करुणता है। उसे दूसरों को हराना है, उसे दूसरों को हराना है, जीतने के लिए नहीं, लेकिन दूसरे के अहम को संतोष देने के लिए। जो हार को समझता है वही देर-सवेर जीत का अधिकारी बन सकता है। कान निंदा श्रवण के लिए नहीं हैं। आप जीभ का उपयोग निंदा कथन या निंदात्मक बातों के प्रचार-प्रसार के लिए नहीं

स्वास्थ्य की परिभाषा... - पेज 10 का शेष

तो इसका एक ही कारण है कि उसकी भोगी प्रवृत्ति बहुत अधिक है, जिसके कारण बीच-बीच में इंद्रियां चंचल होकर रसों के रसास्वादन के लिए आतुर रहती हैं। जिससे योग साधना में वो परिपक्वता नहीं आ पाती, जो आनी चाहिए। परमात्मा के कार्य में संलग्न बहुत सारे योगी आत्माएं जिन्हें शारीरिक कष्ट है या फिर छोटी-मोटी बीमारियां हैं, उसके लिए ही शायद परमात्मा कहते हैं कि जितना हम शरीर से अलग अपने आप को करेंगे, उतना ही हम उन रोगों से अपने आप को दूर कर पायेंगे। क्योंकि शरीर से डिटैच होने से इंद्रियां शांत हो जाती हैं और हमको उतना ही भोजन चाहिए जो हमारे शरीर के तत्वों की क्षति-पूर्ति कर सके। ये बहुत आसान है, इसके लिए बस एक अभ्यास की ज़रूरत है, अपने आप को शरीर से बार-बार डिटैच करने की। इससे हम काफी लंबे समय तक अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं और साधना भी कर सकते हैं।

कथा सरिता

सच्चा बेटा

एक राजकुमार शहर घूमने निकला, उस समय अप्सरा-सी सुंदर नगर सेठ की पुत्रवधु भी उसी रास्ते से घर लौट रही थी। राजकुमार ने उस रूपसी को देखा, वे प्रस्तर प्रतिमा की तरह स्थिर हो गए। ऐसा सौंदर्य तो उसने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था, इतना रूप भी किसी मानवी का होता है यह तो पहली बार ही उसने जाना था। वे कितनी ही देर उसे अपलक निहारते रहे अचानक उनके विवेक ने झटका दिया-यह क्या, मैं भावी राजा होने के नाते पूरी प्रजा का भाई और बेटा हूँ। मेरे से इस प्रकार का घृणित कार्य! किसी राह चलती नगर की बहन-बेटी पर दृष्टि डालना उचित नहीं है।

मुझे समस्त प्रजा की नारीजाति को माँ और बहन समझना चाहिए। धिक्कार है इस नयन युगल को, जिन्होंने विकारी भावों से बहन समान इस नारी को देखा। मुझे तुरंत प्रायश्चित करना चाहिए। वे तत्क्षण पश्चाताप के आँसू बहाते हुए अपनी माता के पास पहुँचे। रोते-रोते उन्होंने पूरा वृत्तांत सुना दिया। किस प्रकार मन में विकार भाव पैदा हुए? साथ सज़ा भी मांग ली। आज की पुत्र मोह में पगली माँ होती तो तुरंत कहती-'क्या हो गया बेटा! मन में ही तो कुछ अशुद्ध भाव पैदा हुए थे। चिन्ता मत कर बेटा। इसमें रोने और सज़ा मांगने जैसा कुछ नहीं है।' वह सच्ची माँ थी। वर्तमान का नहीं, भविष्य का सोचने वाली थी। उसने तुरंत कहा-'तुमने भयंकर भूल की है। पूरी प्रजा की नारियों के सदाचार का दायित्व भविष्य में तुम्हारे ऊपर आने वाला है। अगर तुम ही अपनी नारी प्रजा की सुरक्षा नहीं करोगे तो उसके सदाचार की रक्षा कैसे संभव होगी? 'यथा राजा तथा प्रजा' अगर राजा प्रत्येक की बहन-बेटी को अपनी बहन बेटी समझे तो शील और सदाचार का रक्षण संभव है। लाखों नारियों की पवित्रता के रक्षण के लिए तुझे अभी से ही कृत संकल्प होना चाहिए। सज़ा के फलस्वरूप लगातार चार दिनों तक जैसे काजल आँखों में डाला जाता है वैसे ही मैं अपने हाथों से तुम्हारी आँखों में नमक डालूंगी ताकि भविष्य में कभी भी तुम्हारी नज़रें किसी की ओर नहीं उठें, उठें भी तो वे भाई और पिता की नज़र के रूप में उठें। युवराज ने प्रसन्नतापूर्वक सज़ा स्वीकार की और माँ ने अपने ही हाथों से चार दिन तक नमक डाला। इसे कहते हैं संस्कारवान और सदाचारी बेटा।

संगत का असर

एक संत अपने शिष्यों के साथ जंगल से कहीं जा रहे थे। शाम की प्रार्थना का समय हुआ। झरने के पानी से हाथ धो करके शिष्यों ने चादर बिछाई। प्रार्थना करनी शुरु ही की थी कि अचानक गर्जना करता हुआ एक शेर दूर से दिखाई दिया। उसे देखकर शिष्य भयभीत हुए। वे दौड़कर वृक्ष पर चढ़ गए। शेर नज़दीक आता गया, पेड़ पर बैठे शिष्यों के मन में घबराहट बढ़ती गई। उनका शरीर थर-थर कांपने लगा। पर शेर जैसे आया वैसे ही चला गया। संत प्रार्थना में इतने लीन रहे कि उन्होंने शेर को देखा तक नहीं। शेर ने भी उन्हें नहीं देखा। शिष्य वापस वृक्ष से नीचे उतरे और प्रार्थना में बैठे। प्रार्थना पूरी होते ही चादर उठाकर वे आगे जाने लगे।

अचानक एक मच्छर संत की नाक पर आकर बैठा। मच्छर ने काटा। संत चीख उठे। वे उस वेदना को सहन नहीं कर सके। एक शिष्य बोला-संतवर! यह क्या बात है? शेर पास से गुज़र कर चला गया, तब तो आपने नज़र उठाकर देखा तक नहीं और इस तुच्छ मच्छर ने थोड़ा-सा काटा तो इस थोड़ी-सी वेदना को सहन नहीं कर सके, चीख उठे। यह क्या बात है?

संत ने बहुत ही गहरा उत्तर देते हुए कहा-'वत्स! उस समय मैं ईश्वर के साथ था और इस समय मनुष्य के साथ हूँ।'

बस तू ही

एक राजमहल में एक झाड़ू लगाने वाले ने अचानक रानी को देख लिया। रानी की सुंदरता को दखकर वह मंत्रमुग्ध हो गया। आकर्षण की डोर में बंधा वह कर्मचारी रानी को पाने के सपने देखने लगा। सौंदर्य के आकर्षण में अंधे बने उस अभागे को यह मालूम नहीं था कि कहाँ रानी और कहाँ वह झाड़ू लगाने वाला कर्मचारी। उसने जाकर अपने दोस्तों को सारी बात बताई। दोस्त उसका मज़ाक उड़ाते हुए बोले-कहाँ तो वह महलों की मलिका कहाँ तू सड़क का राजा। पर उसने रानी को हर हाल में पाने का निश्चय कर लिया।

एक दिन उसने साधु का वेश बनाया और पास के गाँव मे जाकर धूनी रमा ली। खाना-पीना सब छोड़कर उसने तू ही तू की रट लगानी शुरु कर दी। लोगों ने सोचा यह ईश्वर को तू ही, तू ही कहकर याद कर रहा है। उसके दर्शनों के लिए लोगों का जमघट लगने लगा। वे आते और श्रद्धापूर्वक प्रणाम करके चले जाते। बहुत से श्रद्धालु रुपए-पैसे भी चढ़ाने लगे। कोई उसकी आरती उतारने लगा तो कोई सामने बैठकर भजन गाने लगा। उसने कभी किसी को आँख उठाकर भी नहीं देखा। वह तो बस रानी की याद में तू ही, तू ही की रट लगाता रहा। धीरे-धीरे आस-पास के गाँव में उसके 'सच्चे भक्तिभाव' के चर्चे होने लगे। किसी को यह नहीं मालूम था कि संत महाराज प्रेम दीवाने बनकर रानी के लिए तू ही तू की रट लगाए हुए हैं। एक दिन राज दरबार में भी उस त्यागी तपस्वी संत की कीर्ति कथा पहुँची। दरबारियों ने राजा को बताया कि एक सच्चे संत राजधानी के पास पधारे हुए हैं। राजा ने रानी से कहा-'मैं तो राजकाज में व्यस्त हूँ तुम जाकर संत महात्मा के दर्शन कर आओ।' रानी संत की कुटिया में जा पहुँची। जब रानी दर्शन कर रही थी, तो सारी भीड़ छंट गई। जैसे ही रानी ने संत के दर्शन किए रानी तुरंत पहचान गई कि यह तो राजमहल का कर्मचारी ही है। दूसरे ही पल रानी ने सोचा-भक्ति की शक्ति किसी में भी प्रकट हो सकती है। रानी ने संत को प्रणाम करते हुए कहा-मैं इस राज्य की रानी हूँ। महाराज ने भी आपके चरणों में प्रणाम निवेदन किया है। यह सुनते ही उस संत की दृष्टि बदल गई। उसने सोचा जब झूठी प्रार्थना करने से रानी आकर मिल सकती है तो सच्चे मन से की गई प्रार्थना से भगवान भी मिल सकते हैं। उसने पलक उठाकर रानी को भी नहीं देखा और बस रट लगाता रहा-तू ही, तू ही, बस तू ही। अब उसका हृदय परिवर्तन हो चुका था। उसके मन में रानी के सौंदर्य के स्थान पर ईश्वरीय सौंदर्य प्रकट हो गया। इस तरह झूठी प्रार्थना सच्ची प्रार्थना में बदल गई।

उत्तराधिकारी

गंगा तट पर सुधर्म ऋषि का आश्रम था। आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे शिष्यों में अमर्त्य, चतुरसेन तथा वीरभद्र ऋषि के प्रमुख शिष्य थे। तीनों ही बड़े निष्ठावान तथा परिश्रमी थे। सुधर्म ऋषि ने अपने उत्तराधिकारी के चुनाव के लिए तीनों शिष्यों को बुलाया और कहा 'तुम तीनों मेरे लिए एक सुंदर-सा उपहार लेकर आओ, इसके लिए मैं तुम्हें एक वर्ष का समय देता हूँ। जो भी मुझे संतुष्ट कर देगा वही मेरा उत्तराधिकारी होगा। तीनों शिष्य ऋषि की आज्ञा लेकर वहाँ से चल दिए। चतुरसेन एक राजा के यहाँ मंत्री पद पर काम करने लगा और वीरभद्र एक समुद्र के किनारे रहकर गोताखोर बन गया। अमर्त्य एक ऐसे राज्य में पहुँचा जो अकाल-पीड़ित था। अकाल से जूझते लोगों में उत्साह जगाकर, उसने एकजुट होकर काम करना सिखाया। कुओं को गहरा करवाया। इस तरह पानी का संकट दूर हो गया। वहाँ फसल लहलहाने लगी। लोग खुशहाल होने लगे। एक वर्ष पूरा हुआ। चतुरसेन तथा वीरभद्र ने अपनी क्षमतानुसार कीमती उपहार गुरु के चरणों में भेंट किए लेकिन अमर्त्य नहीं पहुँचा। ऋषि को चिंता होने लगी। वे उसकी खोज में चल दिए। खोजते हुए ऋषि एक राज्य में पहुँचे। खुशहाल प्रजा को देख ऋषि बहुत प्रसन्न हुए और राजा से मिले। वे बोले 'राजन, आप महान हैं क्योंकि आपकी प्रजा सुखी है।' राजा बोला, 'ऋषिवर, महान तो वह है जो अचानक राज्य में अवतरित हुआ, लोगों को मेहनत करना सिखाया और मेरे राज्य को अकाल की पीड़ा से उबार लिया।' ऋषि ने उस व्यक्ति से मिलने की इच्छा जताई और राजा के साथ हो लिए। ऋषि ने देखा वह और कोई नहीं उनका प्रिय शिष्य अमर्त्य था। धूल पसीने में लिपटे अमर्त्य को गले लगा लिया और बोले, 'दुखियारों के आंसू पोंछकर उन्हें हंसा दे इससे बड़ा उपहार मेरे लिए हो ही नहीं सकता। तुम ही मेरे उत्तराधिकारी हो।'

आजमगढ़-उ.प्र.। किसान सशक्तिकरण अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए कृषि उपनिदेशक आर.बी. सिंह, जिला कृषि अधिकारी बसंत कुमार दूबे, नगरपालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि दीनू जायसवाल, ब्र.कु. रंजना, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. विपिन, ब्र.कु. मीता तथा अभियान दल के सदस्य।

नौतनवाह। महाशिवरात्रि पर आयोजित रैली 'शिव की बारात' के दौरान उपस्थित हैं विधायक मुन्ना सिंह, ब्र.कु. विष्णु, ब्र.कु. प्रहलाद, ब्र.कु. संदीप तथा अन्य।

सासाराम-बिहार। महाशिवरात्रि पर आयोजित सर्व धर्मात्माओं की झाँकी का उद्घाटन करते हुए एस.पी. संदीप लांडे, डी.एस.पी. अलख निरंजन चौधरी, एस.डी.ओ. निलिन कुमार, ब्र.कु.बबिता, ब्र.कु.सुनीता व अन्य।

सोनीपत। महाशिवरात्रि पर आयोजित 'अंधकार से प्रकाश की ओर' कार्यक्रम में शिव ध्वज लहराते हुए भाजपा उपाध्यक्ष राजीव जैन, ब्र.कु. चक्रधारी, प्रो. एस.एम. मिश्रा, ब्र.कु. लक्ष्मण व अन्य।

तिनसुकिया-असम। 'शिवजयंती महोत्सव' कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए राजीव रंजन,कमांडेन्ट,सी.आर.पी.एफ., ब्र.कु. सत्यवती तथा अन्य।

कानपुर-किदवई नगर। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के समय उपस्थित हैं स्वामी मुनीष शर्मा जी महाराज,शंकराचार्य मठ प्रमुख, ब्र.कु. दुलारी तथा अन्य।

स्वास्थ्य की परिभाषा...

विश्व में स्वास्थ्य को लेकर सभी के अंदर अलग-अलग भ्रांतियां हैं। कोई कहता है कि जो व्यक्ति रोगों से पूर्णतया विमुख है या अलग है उसे स्वस्थ कहेंगे। या फिर वो व्यक्ति स्वस्थ है जो सम्पूर्ण इंद्रियों का रस ले सकता है। तीसरा पहलू यह है कि जिसके शरीर में प्रतिपल हो रहे परिवर्तन का अंदाज़ा इस बात से लगाया जाये कि उन्हें बीच-बीच में कुछ न कुछ संक्रमण होता है क्योंकि स्वास्थ्य विशेषज्ञों का यही कहना है कि सामान्य व्यक्ति अगर सम्पूर्ण रूप से हर मौसम में स्वस्थ है तो इसका अर्थ यह है कि उसके अंदर मौसम जनित कुछ रोग छिपे हैं जो समयांतर उभर सकते हैं। इसलिए उसे कुछ न कुछ बीमारी चाहे वो सर्दी, जुकाम ही क्यों न हो, होना अति आवश्यक है। लेकिन मैं इन सबसे अलग आपके सामने परिभाषा को रखना चाहूंगा।

रोग वह है जिसमें शरीर की पीड़ा का प्रतिपल एहसास होता है। इसके विपरीत भोग वह है जो शारीरिक इंद्रियों को सुख की प्राप्ति कराता है और योगी रोग और भोग से ऊपर होता है। अब यहाँ प्रश्न उठता है कि रोग क्या है? और स्वास्थ्य किसे कहते हैं?

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार कहा जाये तो 'रोग एक विकृति है, एक ऐसा विकार है जो अंगों को कार्य करने में बाधा खड़ी करता है।' इसका कारण चाहे बैक्टीरिया या वायरस हो सकता है। इसके विपरीत स्वास्थ्य की परिभाषा यह हो गयी कि शरीर में किसी भी प्रकार के रोग का अभाव ही स्वस्थ होना है, या समुचित स्वास्थ्य है। अगर इसे नकारात्मक परिभाषा कहें तो अनुचित नहीं होगा। यदि हम स्वास्थ्य को परिभाषित कर रहे हैं तो रोग को बीच में क्यों लाना है? रोग को बीच में लाना अर्थात् नकारात्मक परिभाषा देना है।

आयुर्वेद के अनुसार, रोग और स्वास्थ्य की एक परिभाषा प्रस्तुत की गई है, जिसके अनुसार 'देह को भूल जाना ही स्वास्थ्य है।' जब कोई अपने शरीर को भूल जाता है उस समय वह स्वस्थ होता है क्योंकि प्राकृतिक अवस्था में अंग और अवयव बड़े सुचारू रूप से कार्य करते हैं। इस समय उनका कोई एहसास नहीं होता। इसके विपरीत 'रोग उस अंग-अवयव के होने का अनुभव है।' उदाहरणार्थ, यदि किसी के पैर में दर्द हो रहा है या आँख में दर्द हो रहा है तो उसे उस समय आँख व पैर की उपस्थिति का आभास होता है और ऐसा तब होता है जब पैर या आँख में रोग हो।

'देह को भूल जाना ही स्वास्थ्य है।' जब कोई अपने शरीर को भूल जाता है उस समय वह स्वस्थ होता है क्योंकि प्राकृतिक अवस्था में अंग और अवयव बड़े सुचारू रूप से कार्य करते हैं। इस समय उनका कोई एहसास नहीं होता।
देह के होने का एहसास रोग देता है, न होने का एहसास विदेह है।
इसके लिए बस एक अभ्यास की ज़रूरत है, अपने आप को शरीर से बार-बार डिटैच करने की। इससे हम काफी लंबे समय तक अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं और साधना भी कर सकते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार यदि देखा जाये तो शरीर को समग्र रूप से कौन और कब भूल सकता है? इसके लिए सम्पूर्ण योग की उच्चतम अवस्था चाहिए। केवल एक योगी ही देह से विदेही हो सकता है। देह के होने का एहसास रोग देता है, न होने का एहसास विदेह है।

भोगी को देह ही प्यारी है, वह इंद्रियों की तृप्ति के लिए नाना प्रकार के यत्न करता है। उसे ये नहीं पता कि इंद्रियों की तृप्ति की कोई सीमा रेखा नहीं है। प्रकृति ने इसमें इतनी सुप्त अग्नि भरी हुई है कि इसको जितना भड़काओ उतनी भड़कती है। इसका खामियाज़ा शरीर को भुगतना पड़ता है। भोग की उत्क्रांति या उच्च अवस्था या उसे सम्पूर्णतया निग्रह या कम कर देना जिसे यौगिक भाषा में प्रत्याहार कहते हैं, ही योग की उच्च अवस्था है। इसके लिए बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों ने प्रत्याहार की बात कही है। रोग एक बहुत बड़ी विकृति है जिसे संयम से साधा जा सकता है। जब कोई साधक की साधना में बाधा आ रही है -शेष पेज 8 पर...

खुशियाँ आपके साथ...

7 कदम राजयोग की ओर...

प्रश्न: मुझे छोटी-छोटी बातों में बहुत डर लगता है और मैं बहुत सोचने लगती हूँ। हमारे ऊपर कर्ज़ भी बहुत हो गया है। घर में अनेक समस्याएँ आ रही हैं, मैं क्या करूँ?

उत्तर: ये डर आजकल बहुत मनुष्यों के साथ उत्पन्न हो रहा है। मनुष्य के जन्म-जन्म के विकर्म और विकार उसे डरा रहे हैं। मनुष्य ने अपनी आंतरिक शक्तियाँ भी बहुत नष्ट कर दी हैं। इसलिये वह कमज़ोर भी बहुत हो गया है। आप सवेरे आँख खुलते ही 7 बार याद करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, निर्भय हूँ और 21 दिन तक इसी स्वमान से राजयोग का अभ्यास करें। इससे आपका भय समाप्त हो जाएगा। बहुत ज़्यादा सोचने की आदत भी आजकल बढ़ती जा रही है, परंतु याद रखना है कि बहुत ज़्यादा सोचने से मन की बहुत ज़्यादा शक्तियाँ नष्ट होती हैं और सेंसिटिव मन वातावरण की सभी निगेटिव एनर्जी को ग्रहण करने लगता है। इससे अनेक कठिनाइयाँ पैदा हो जाती हैं। इसके लिए आप दो बातों पर ध्यान दें। एक अव्यक्त मुरली का अध्ययन रोज़ करें और कोई भी एक स्वमान लेकर सारा दिन उसका अभ्यास करते रहें।

अपने परिवार के सभी विघ्नों को नष्ट करने के लिए एक 21 दिन की विघ्न-विनाशक भट्ठी करें। दो स्वमान याद करके कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और विघ्न विनाशक हूँ, फिर एक घण्टा शक्तिशाली योग करें। ऐसा 21 दिन तक करें। यदि आपका योग पावरफुल होगा तो सभी विघ्न नष्ट हो जाएंगे।

प्रश्न: मैं 12 की विद्यार्थी हूँ। मैं सभी सब्जेक्ट में अच्छी हूँ। बस गणित में सफल नहीं हूँ। मेरी केमिस्ट्री बहुत अच्छी है परंतु परीक्षा के समय मैं सबकुछ भूल जाती हूँ। मैं क्या करूँ?

उत्तर: आप सवेरे या शाम कभी भी आधा घण्टा राजयोग मेडिटेशन करें और सवेरे उठकर 5 बार याद करें कि मैं बुद्धिमान हूँ और गणित में बहुत होशियार हूँ। मैं गणित को पूरी तरह एन्जॉय करती हूँ। ऐसा करने से आपका अंतर्मन आपकी इस समस्या को समाप्त कर देगा। रोज़ 2 बार यह अभ्यास करना कि मैं आत्मा स्वराज्याधिकारी हूँ। मन-बुद्धि की मालिक हूँ फिर अपनी बुद्धि से बात करना कि हे मेरी बुद्धि मैं जो कुछ भी याद करूँ तो उसे परीक्षा के समय इमर्ज कर देना और परीक्षा के समय भी यह याद करके कि मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ, अपने बुद्धि से बात करना कि हे मेरी बुद्धि, जो कुछ मैंने याद किया है, सबको इमर्ज करा दे। बस आपको सबकुछ याद आ जाएगा। आपकी समस्या समाप्त हो जाएगी।

प्रश्न: मैं 40 वर्षीय गृहणी हूँ। ज्ञान-योग का अभ्यास भी करती हूँ, परंतु मेरा पति बहुत शराब पीता है। मेरे दो लड़के हैं। दोनों की पढ़ाई में कोई रुचि नहीं है। सारा दिन मोबाईल में लगे रहते हैं। मुझे इनके भविष्य की बहुत चिंता है। क्या योगशक्ति से ये सब ठीक किया जा सकता है?

उत्तर: कलयुग के प्रभाव के कारण आज अनेक समझदार और बुद्धिमान लोग शराब का सेवन कर रहे हैं और अपने जीवन को नष्ट कर रहे हैं। विज्ञान के ये उपहार अनेक युवकों के लिए अभिशाप बन गए हैं।

कई बच्चे ये महसूस ही नहीं करते कि पढ़ाई उनके लिए कितना महत्वपूर्ण है। यदि वे पढ़ेंगे ही नहीं तो वो जीवन में क्या करेंगे?

आप अपने घर में योग का वातावरण बनाओ। सवेरे उठकर एक घण्टा शक्तिशाली योगाभ्यास करो और सारे दिन में 3 बार 20-20 मिनट योगाभ्यास करके अपने घर में श्रेष्ठ वायब्रेशन्स फैलाओ। इससे सभी के विचार बदल जाएंगे और उन्हें आत्म जागृति होगी। वे अपने जीवन के बारे में सचेत होंगे और इन बुराइयों से मुक्त हो जाएंगे। साथ ही साथ भोजन बनाते हुए कम से कम 100 बार याद करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। इससे भोजन पवित्र वायब्रेशन्स को ग्रहण कर लेगा और ऐसा भोजन खाने से इन सभी के ये व्यसन छूटेंगे।

घर की ऐसी परिस्थिति को देखकर आप ना चिंतित हों ना परेशान। क्योंकि ये कलयुग का अंत है। यहाँ चहुँ ओर कालिमा है और अब ये खेल बदलने वाला है। आपको याद रखना है कि यदि आप बहुत चिंतित और परेशान रहेंगी तो आपकी बिगड़ी हुई मनोस्थिति इन सबकी मनोस्थिति को और बिगाड़ेगी। आप अपने सामने ये महावाक्य लिखकर रख लो कि यदि आपकी स्थिति श्रेष्ठ होगी तो परिस्थितियाँ सहज ही बदल जाएंगी और स्थिति को श्रेष्ठ बनाने का आधार है - स्वमान का अभ्यास।

प्रश्न: मेरा नाम भावना है। मैं पुणे से हूँ। मैंने अपनी सगी बहन को बहुत सारे पैसे उधार दिये हैं। दो वर्ष हो गए, वो मेरे पैसे नहीं लौटा रही है। तारीख पे तारीख दिए जा रही है। इससे मेरी टेंशन बढ़ गयी है। रात को नींद नहीं आती। मैं उससे अपने पैसे कैसे प्राप्त करूँ?

उत्तर: आपकी समस्या तो निश्चित रूप से चिंता देने वाली है, परंतु अपनों को भी समय पर मदद करना ही पड़ता है लेकिन कलयुग की ये रीति-नीति ही हो गयी है कि लोग पैसे लेकर देते नहीं। इस कारण से भी किसी को मदद करने की भी इच्छा नहीं होती।

आप सवेर उठकर 7 बार याद करना मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और अपनी बहन को आत्मा के रूप में देखकर ये संकल्प करना कि ये आत्मा बहुत भाग्यवान और धनवान है, फिर वीज़न बनायें कि वो एक मास में मेरा पैसा देने आ गयी है। साथ ही इस समस्या को हल करने के लिए किसी भी टाईम आधा घण्टा योग भी कर लें।

अपने मन को थोड़ा हल्का भी रखें क्योंकि पैसे से ज़्यादा महत्वपूर्ण आपका जीवन और नींद है। चिंता करने से तो जीवन का सुख नष्ट हो जाता है। आप विश्वास रखें कि आपके पैसे जल्दी ही आपके हाथ में आ जाएंगे।

प्रश्न: मुझे ये बताइये कि सतयुग आने वाला है और मैंने सुना है कि वहाँ सोने के ही महल होंगे तो वहाँ इतना सोना आएगा कहाँ से?

उत्तर: ये तो भगवानुवाच है कि सतयुग में भारत सोने की चिड़िया होगा। सब धन-धान्य से परिपूर्ण होंगे। सोने और हीरों के महल होंगे। प्रकृति का अतुलनीय सौंदर्य होगा, परंतु अपका यह प्रश्न स्वाभाविक है कि इतना सोना आएगा कहाँ से?

सतयुग का अथाह सोना और हीरे धरती के गर्भ में समाए हुए हैं। विनाशकाल में प्राकृतिक प्रकोप बहुत होंगे। नीचे की सभी धन-संपदा ऊपर आ जाएगी और भारत भूमि स्वर्ण से भरपूर हो जाएगी। सागर के तले में जो रत्न हैं, वो भी भारत की भूमि पर आ जाएंगे, क्योंकि सागर में भी बहुत सारे परिवर्तन होंगे। इसके अतिरिक्त आकाश में भी हीरों के उल्का पिण्ड घूम रहे हैं, वो भी भारत की भूमि में आ गिरेंगे और भारत धन-धान्य से भरपूर होगा और आप भी अपना सोने का महल बना लेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

ब्रह्माकुमारी संस्था समाज को नई दिशा दे रही है...

ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के सर्व मंत्रीमहोदय व विधायकगण शरीक हुए।

- डॉ. रमन सिंह

रायपुर। कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री माननीय डॉ. रमन सिंह। मंचासीन हैं गौरीशंकर अग्रवाल, टी.एस. सिंहदेव, ब्र.कु. ओमप्रकाश, ब्र.कु. मृत्यंजय, ब्र.कु. आशा,भिलाई तथा अन्य।

रायपुर। ब्रह्माकुमारी संस्था समाज को नई दिशा दे रही है। हमारी तपस्वी बहनें गाँव-गाँव में जाकर लोगों को जो ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा दे रही हैं, वह लोगों की नैतिक उन्नति में सहायक सिद्ध हो रहा है। उक्त उद्‌गार ब्रह्माकुमारीज़ के राजनीति प्रभाग द्वारा आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने व्यक्त किये।

उन्होंने कुछ वर्ष पूर्व की अपनी माउण्ट आबू यात्रा का उल्लेख करते हुए कहा कि वह अत्यन्त अविस्मरणीय यात्रा थी। वहाँ तपस्वीमूर्त दादियों से मिलना और आध्यात्मिक ज्ञान तथा राजयोग की शिक्षा प्राप्त करना सबकुछ बहुत ही यादगार रहा। उन्होंने आगे कहा कि शान्ति सरोवर में समय-समय पर देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक, राजयोग विशेषज्ञों का आगमन होता रहता है जिससे छ.ग. के लोगों को अच्छा लाभ मिलता रहता है।

विधानसभा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल ने कहा कि आज के भौतिक युग में शान्ति सरोवर शान्ति प्राप्त करने का बहुत ही अच्छा स्थान है। यहाँ आने से ही शान्ति और शक्ति की अनुभूति होती है। उन्होंने सभी विधायकों को यहाँ की शिक्षाओं से लाभ उठाने का आग्रह किया। नेता प्रतिपक्ष टी.एस. सिंहदेव ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि इतने अच्छे और शान्त वातावरण में कुछ पल बिताने का अवसर मिला। राज्य का विकास हम सभी का दायित्व है। इसके लिए समय-समय पर हमें मार्गदर्शन मिलता रहे, यही ब्रह्माकुमारी संस्थान से अपेक्षा है।

क्षेत्रीय निदेशक ब्र.कु. ओमप्रकाश ने कहा कि सर्वांगीण विकास के लिए भौतिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास भी ज़रूरी है। इसके लिए ब्रह्माकुमारी संस्था छ.ग. में अपने सौ से भी अधिक सेवाकेन्द्रों के माध्यम से यह कार्य कर रही है।

संस्थान के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्यंजय ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि वर्तमान समय विश्व परिवर्तन का महत्वपूर्ण कार्य चल रहा है। परमात्मा हमें आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर हमारी कमी कमज़ोरियों को दूर करने का कार्य कर रहे हैं। इस पुण्य कार्य में हम सभी को मिल-जुलकर सहयोग करना है।

इस अवसर पर कृषि व जल संसाधन मंत्री बृजमोहन अग्रवाल, लोक निर्माण मंत्री राजेश मूणत, महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती रमशिला साहू और खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री पुन्नू लाल मोहिले सहित बड़ी संख्या में विधायकगण उपस्थित थे।

यूक्रेन-मॉस्को। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुधा तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

सैफई-उ.प्र.। सैफई महोत्सव के अंतर्गत आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर पर मुख्यमंत्री माननीय अखिलेश यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निधि। साथ हैं ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. दीप्ति तथा अन्य।

दिल्ली-करोल बाग। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. बृजमोहन, स्वामी ब्रह्मदेव,त्रिनिदाद, विधायक सोमनाथ भारती, ब्र.कु. पुष्पा व ब्र.कु. लक्ष्मी।

सहायल-दिवियापुर(उ.प्र.)। कृषि रथ यात्रा का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. राजेन्द्र प्रसाद, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. मालती, ब्र.कु. मोना, ब्र.कु. प्रीति तथा अन्य।

सिरसा। 79वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती कार्यक्रम में मंचासीन हैं जिला एवं सत्र न्यायाधीश कुलदीप जैन, ब्र.कु. बिन्दू तथा ब्र.कु. ओमप्रकाश।

सोलन-हि.प्र.। एस.पी. छाजटा व श्रीमती छाजटा के साथ ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबीता।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

मैं मास्टर पवित्रता का सूर्य हूँ।

सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् मन, वचन, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क, स्वप्न में भी अपवित्रता का नाम-निशान न हो। ऐसी आत्माओं के चलन और चेहरे में स्पष्ट दिव्यता दिखाई देती है। उनके नयनों में रूहानी चमक, चेहरे में सदा हर्षितमुखता और चलन में, हर कदम में बाप समान कर्मयोगी होते हैं।

योगाभ्यास – रूहानी ड्रिल का अभ्यास। प्रथम दस मिनट - मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा भृकुटी सिंहासन पर विराजमान हूँ.. मुझसे पवित्रता की श्वेत रश्मियां चारो ओर फैल रही हैं। द्वितीय दस मिनट - मैं लाईट के शरीर में ग्लोब के ऊपर स्थित हूँ... मेरे अंग-अंग से प्योर वायब्रेशन्स फैल रहे हैं.. मैं अपने फरिश्ते स्वरूप द्वारा पूरे ग्लोब को सकाश दे रहा हूँ...। तृतीय दस मिनट - मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा, परमधाम में, मुझसे पवित्रता के वायब्रेशन्स पूरे ब्रह्माण्ड में फैल रहे हैं। चतुर्थ दस मिनट - मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा पवित्रता के सूर्य की किरणों के नीचे स्थित हूँ..उनसे निकली हुई पवित्रता की सफेद किरणें निरंतर मुझ आत्मा पर बरस रही हैं..।

धारणा - सत्यता और पवित्रता - संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति है सत्यता और पवित्रता की शक्ति। सम्पूर्ण पवित्रता ही सत्यता की निशानी है। इस समय धारण की गई सम्पूर्ण पवित्रता से ही सतयुग में आत्मा और शरीर दोनों ही पवित्र होते हैं।

चिन्तन - पवित्रता व सत्यता की शक्ति नैचुरल नेचर के रूप में कहाँ तक बनी है, यदि नहीं तो क्यों? पवित्रता व सत्यता की शक्ति को नैचुरल नेचर कैसे बनाएं? सम्पूर्ण पवित्र आत्माओं की क्या निशानियां दिखाई देंगी?

स्वराज्य अधिकारियों के प्रति - समस्याएं व विघ्न आने का आधार विशेष मन है। इसलिए बापदादा का महामंत्र भी है - मनमनाभव। अगर स्वराज्य के मालिकपन का नशा सदा रहे तो यह बीच-बीच में जो समस्याएं व विघ्न आते हैं वह आ नहीं सकते। मन आपका कर्मचारी है राजा नहीं। राजा अर्थात् अधिकारी। तो नशा रहे - मैं मालिक राजा, इन कर्मेन्द्रियों का अधिकारी आत्मा हूँ। सर्वशक्तियां मेरे निजी गुण हैं। मुझ मा. सर्वशक्तिवान के आगे कोई भी समस्या या विघ्न आ नहीं सकता। अभी समस्या का नाम, विघ्न का नाम, हलचल का नाम, व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ कर्म का नाम, व्यर्थ सम्बन्ध का नाम तथा व्यर्थ स्मृति का नाम समाप्त करो और कराओ।

स्वमान - मैं शुभ संकल्पधारी पवित्र आत्मा हूँ।

- पवित्रता ब्राह्मण जीवन का वरदान है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आँख की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। पवित्रता के आधार से ही ब्रह्मा बाबा 'आदि देव वा फर्स्ट प्रिंस' बने। तो फॉलो फादर।

2. योगाभ्यास -

शिव भगवानुवाच -

अ. मैं शुभ संकल्पधारी पवित्र आत्मा हूँ - सदा इस स्वमान में स्थित हो जाओ तो प्योरिटी की पर्सनैलिटी और अथॉरिटी का अनुभव होगा।

ब. आपका पहला वायदा है - और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे, तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैठूँ....., मेरा तो एक दूसरा न कोई। तो इस वायदे पर पूरा अटेन्शन रखना अर्थात् प्योरिटी की पर्सनैलिटी को धारण करना।

स. वरदाता बाप को कम्बाइन्ड रूप में अनुभव करो तो अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती।

द. तुम्हारा स्व-स्वरूप ही पवित्र है, स्वधर्म पवित्र है, स्व-देश पवित्र देश है, स्वराज्य पवित्र राज्य है।

3. धारणा - सम्पूर्ण पवित्रता

- पवित्रता ब्राह्मण जीवन की महानता है।
- पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है।
- 21 जन्मों के प्रालब्ध का आधार पवित्रता है।- आत्मा और परमात्मा के मिलन का आधार पवित्रता है।
-संगमयुग की सर्व प्राप्तियों का आधार पवित्रता है।

4. चिंतन - सम्पूर्ण पवित्रता से बाबा का क्या अभिप्राय है?

सभी धर्म के पुरोधो ने माना परमात्मा 'शिव' एकनाम

एक मंच पर बैठे धर्म नेताओं ने किया परमात्मा के बारे में विचार-विमर्श

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। 'सबका मालिक एक' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आशा। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन तथा डॉ. एस.एम. मिश्रा।

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में शिवरात्रि का पावन पर्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभी ने परमात्मा शिव के ध्वज तले जीवन को बुराइयों से मुक्त करने की प्रतिज्ञा ली। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। सर्व धर्म सम्मेलन में 'सबका मालिक एक' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सभी धर्मों के जाने-माने वक्ताओं से भाग लिया।

ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि रात्रि शब्द का अर्थ अज्ञान से है। परमपिता शिव जब इस सृष्टि में आते हैं तब सभी मनुष्य आत्माएं अज्ञान नींद में सोई रहती हैं। सबसे बड़ा अज्ञान आत्मिक स्वरूप को भूल जाना हैं, जिस कारण मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार के दु:ख और अशाति आ जाती है। परमात्मा हमें सत्य स्वरूप की स्मृति देकर हमारी सारी बुराइयों को हर लेते हैं, इसी यादगार में आज तक भी हम शिवलिंग के ऊपर अक, धतूरे जैसी चीज़ें चढ़ाते हैं। व्रत की वास्तविकता के बारे में उन्होंने बताया कि व्रत का अर्थ सिर्फ एक दिन के भोजन त्याग करने से नहीं है, व्रत अर्थात् मन के दृढ़ संकल्प से जीवन में श्रेष्ठ कार्य करने से है। उन्होंने कहा कि कई लोग जागरण करते हैं, जागरण का भाव वास्तव में आत्मा की जागृति से है।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने शिव के तीसरे नेत्र के बारे में बताया कि यहाँ पर किसी स्थूल नेत्र की बात नहीं है बल्कि परमात्मा शिव ने हमें आत्मा का, व स्वयं का सच्चा ज्ञान दिया, इसी को तीसरा नेत्र भी कहा जाता है जिससे आत्माओं के सब दु:ख दूर हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय परिवर्तन का समय है, इसी समय सभी आत्माएं तमोप्रधान बन चुकी हैं। अब स्वयं परमात्मा शिव गीता के कथन अनुसार पुन: इस कलियुगी सृष्टि का परिवर्तन कर सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। ओ.आर.सी. की मुख्य राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. मधु ने सभी को योग द्वारा गहन शान्ति का अनुभव कराया।

ई.आई. मालेकर, मानद सचिव,यहूदी धर्मसभा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें सभी के धर्मग्रन्थों का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी धर्मों की शिक्षाएं समान हैं, अगर अंतर है तो उनको सिर्फ जीवन में उतारने का। जीवन का असली सत्य यही है कि हम सबसे प्रेम से व्यवहार करें, सबको सहयोग दें और जो वयवहार मेरे अनुकूल ना हो वैसा दूसरों से न करें।

मो.अहमद,राष्ट्रीय सचिव, जमात इस्लाम हिन्द ने कहा कि खुदा प्यार के साथ-साथ न्यायकारी भी है, इसलिए हमें भी चाहिए कि सबके साथ न्याय हो। हम सब उसके बन्दे हैं। किसी के साथ भेदभाव नहीं हो तभी इस विश्व में शान्ति और अमन कायम हो पायेगा।

डॉ. एम.डी. थॉमस,इन्सटीट्यूट ऑफ हारमनी स्टडीज़ ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज हम परमात्मा को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं, जबकि वास्तव में देखा जाए तो उसका एक ही रूप है। जिस प्रकार किसी एक ही वस्तु के अनेक देशों में भाषा के आधार से भिन्न-भिन्न नाम होते हैं, वैसे ही परमात्मा के भी अनेक नाम हैं। परमात्मा का प्यार सबके लिए समान है, वो किसी से भी जाति व धर्म के आधार से प्यार नहीं करता। जब हम उससे जुड़ते हैं तो हमें सारा ही विश्व एक परिवार लगता है।

गुरूबचन सिंह, उपाध्यक्ष, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति ने कहा कि परमात्मा ने जब मनुष्य को रचा तो उसको अपने जैसा बनाया। जिस तरह परमात्मा बेहद है, हमारी सोच भी बेहद होनी चाहिए। हमारा जीवन सिर्फ अपने लिए नहीं है, इसका महत्व तभी है जब हम दूसरों के काम आते हैं।

डॉ. एस.एम. मिश्रा, संस्कृत विश्व-विद्यालय कुरुक्षेत्र ने कहा कि सभी धर्मों में परमात्मा को प्राय: ज्योति के रूप में ही माना जाता है, और शिवलिंग भी ज्योति स्वरूप का ही पर्याय है। हमारे देश में जितने भी प्रमुख शिव मंदिर हैं उनको ज्योतिर्लिंगम के नाम से ही जाना जाता है। अनेक भाषाओं और अनेक सिद्धान्तों के कारण लोगों में मतभेद पैदा हुए हैं। आज हमें आवश्यकता है कि हम ईश्वर की एकरूपता को स्वीकार कर सबका सम्मान करें। इस संसार का पतन तब से शुरु हुआ जबसे हमने उसको अलग-अलग समझना शुरु कर दिया।

ब्रह्मदेव ने माना 'ब्रह्मतत्व' निवासी निराकार शिव परमात्मा का अस्तित्व: त्रिनिदाद वैदिक विश्व-विद्यालय के उपकुलपति स्वामी ब्रह्मदेव ने कहा कि शिवरात्रि निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप ज्योतिर्लिंग परमात्मा शिव का मनुष्य समाज में व्याप्त अज्ञान अंधकार दूर करने हेतु अवतरित होने का यादगार दिवस है। उन्होंने कहा कि केवल पूजा-पाठ, व्रत आदि से ही नहीं, अपितु शिव के वास्तविक निराकार स्वरूप की पहचान तथा राजयोग द्वारा उनके साथ अंतरात्मा के सर्व सम्बन्धों की याद से ही मनुष्य अपने पापों को भस्म कर सकता है। उपरोक्त धर्म के पुरोधो ने तथाकथित रुप से परमात्मा शिव के अस्तित्व को स्वीकारा, चाहे वह अंशत: ही क्यों न हो!

आनंद व सुख की अनुभूति कल्पना में बस गई – बृजेन्द्र ओसवाल

बयाना-भरतपुर। वह बिना कानों के सुनने वाले, बिना हाथों के कर्म करने वाले तथा बिना आँखों के देखने वाले देह से न्यारे शिव परमात्मा निराकार ज्योति बिन्दु स्वरूप जन्म-मरण से मुक्त हैं। उक्त उद्गार बृजेन्द्र ओसवाल, उपखण्ड अधिकारी ने ब्रह्माकुमारीज़ के बयाना उप-सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित 79वें त्रिमूर्ति महाशिवरात्रि महोत्सव पर प्रकट किये। उन्होंने कहा कि वास्तव में परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का संदेश देने वाले इस भव्य आयोजन का यथार्थ आनंद व सुख की अनुभूति कल्पना में बस गई और परमात्मा का स्वरूप आज प्रत्यक्ष में अनुभव हुआ, यह अविस्मरणीय है।''

'एक शाम शिव पिता के नाम' नामक कार्यक्रम में बयाना उप-सेवाकेन्द्र ने नृत्य, गीत, संगीत एवं प्रवचनों के कार्यक्रम के माध्यम से 79वीं शिव जयंती का आयोजन बड़े भव्य रूप से किया। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण विदर्भ के सुप्रसिद्ध गायक ब्र.कु. अविनाश थे।

इस अवसर पर ब्र.कु.संतोष ने दीप प्रज्वलन की प्रथा को निराकार परमात्मा शिव का यादगार बताते हुए कहा कि ''परमात्मा शिव सर्व मनुष्य आत्माओं के माता-पिता, सदगति दाता, दु:खहर्ता-सुखकर्ता व पतित-पावन हैं। परमात्मा शिव सर्वोच्च, सर्वमान्य, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्व से न्यारे हैं। गीता में वर्णित ''यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत...'' श्लोक के वचनानुसार परमात्मा शिव का इस भारत भूमि पर दिव्य अवतरण हो चुका है। यहाँ रात्रि शब्द घोर अज्ञान अंधियारे व तमोप्रधानता का प्रतीक है।

बयाना-भरतपुर। कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग करते हुए बृजेन्द्र ओसवाल, देवी सिंह बुडवार, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. अविनाश व अन्य।

कार्यक्रम की अध्यक्षता भरतपुर की राजयोगिनी ब्र.कु. कविता द्वारा की गई। कार्यक्रम में बृजेन्द्र ओसवाल,उप खंड अधिकारी, देवी सिंह बुडवार,अध्यक्ष, कृषि उपज मंडी समिति, तथा धर्मेन्द्र तिवारी,अध्यक्ष मंडी समिति आदि विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। विदर्भ के गायक ब्र.कु. अविनाश ने गीतों के माध्यम से बताया कि श्रीकृष्ण को सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण एवं मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने वाले भी परमात्मा शिव ही हैं। उनके सहज ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा द्वारा हम भी ऐसे बन सकते हैं।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक **190** रुपये, तीन वर्ष **570** रुपये, आजीवन **4500** रुपये । **विदेश - 2500** रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 14th Mar 2015
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।